92

कथा : श्री महाराजा अग्रसेन जी

-: कथाकार :-

त्रिलोक गोयल

अग्रसेन नगर,
अजमेर

प्रथम संस्करण
1984

मूल्य
पांच रूपये

-: प्रकाशक :-

रामलाल अग्रवाल

अग्रजीवन प्रतिष्ठान
गोपालजी का रास्ता
जयपुर-3

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थान :-
अग्रजीवन कार्यालय
जयपुर

"नवीन राजस्थानी भाषा" में—

भूमिका : "श्री महाराजा अग्रसेनजी री कथा"

☐ आज दिन, आ खुशी री बात है कि-आपणा पुरखा परमपूज्य श्री अग्रसेन जी महाराज को जीवन-चरित्र,-अबै धीरे-धीरे, प्रकाश में आवा लाग्यो है। श्री अग्रसेन जी रो अवतार, अब से काई ५ हजार बरसां पैली हुयो हो !

☐ श्री महाराजा अग्रसेन जी रे बाद तीन - चार हजार बरस बीत गया। लारैं, अबार ईं सहस्त्राब्दि रा सरू में, ईं भारत देश में, "अजयमेरु" रा पृथ्वीराज चौहान राज करयो। बाद में, दिल्ली में बादशाह अकबर मुगलां रो राज जमायो। अकबर का गादी पर बैठवा कै वक्त, "दिल्ली" की गादी पर अग्रवाल-समाज रा महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य राज करयो !

☐ भारत में, मुगलां कै बाद, १७२७ में, सवाई जयसिंह "जयपुर" बसायो। पण "एक छत्र-राज" अंग्रेज करयो। फेर वै अंग्रेज भी, १५ अगस्त १९४७ नै, लंदन चाली गया !

☐ अबै १५ अगस्त १९४७ सै पैली, (i) देश रो आजादी, (ii) राजस्थान-राज्य रो निर्माण, तथा (iii) महाराजा अग्रसेन (iv) अग्रोहा व (v) अग्रवाल-समाज रा उत्थान कै ताईं-ईं "महान यज्ञ" की ज्वाला में, घणा-खरा प्रमुख "अग्रजन" अपणा तन मन धन रो, बलिदान दियो। ईं स्वाधीनता-संग्राम में-महाराणा प्रताप सेठ भामाशाह, वीर शिवाजी, लाला लाजपतराय, सेठ जमनालाल बजाज, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, कविवर छगनलाल "मांडव्य" तथा बाबा नृसिंहदास अग्रवाल और कई-कई महापुरुष अपणो सर्वस्व अर्पित करयो।

☐ आजादी कै पैली भी, कई जणा श्री महाराजा अग्रसेन जी रो चरित्र तैयार करयो। बाद में, आजादी रा इण चार दशक में, यो काम तेजी कै साथ चलणो चावै हो। अब आ खुशी री बात है कि भाई त्रिलोक गोयल घणो परिश्रम कर के—आ श्री अग्रसेनजी महाराज री कथा लिखी है। आशा है, अब सारा अग्र-जन, श्री अग्रसेन जी महाराज रा चरित्र नै, अधिकाधिक तरीकां सै, प्रकाश में ल्यावा का ईं काम में, पूरो-पूरो सहयोग करसी ! इति शुभम् !

—डॉ० अनन्त पी. आनन्द पत्रकार

(दिल्ली, जयपुर, अजमेर)

कथा महाराज श्री अग्रसेन जी री

मिले प्रेरणा, बल बधे,
माथो ऊंचो होय ।
पुरखां रो सुमिरण सदा,
हिवड़े दिवलो जोय ।।

—: कथाकार :—

त्रिलोक गोयल

अग्रसेन नगर, अजमेर

☐

—: प्रकाशक :—

रामलाल अग्रवाल

संस्थापक, संचालक अग्रजीवन मासिक

गोपालजी का रास्ता, जयपुर

मूल्य पांच रूपये

समर्पण

अग्रोहा रा कण कण ने,
अग्र–जाति रा जण जण ने।
अग्रसेन री कथा समर्पित, भारत रा जण गण मन ने ।।

—त्रिलोक गोयल

—: कथा री कथा :—

कथा किणी री भी हो परसाद ज्यूं हुवे है, ऊं ने माथे लगार सरधा भाव सूं ग्रहण ही करी जावे है, विवेचना नीं ।

कथा में पुराण सो मिठास न कहाणी सो चटपटो पण हुवे है, आनन्द रो आनन्द अर कल्याण रो कल्याण । कथा रो आधार न ऐतिहासिक हुवे है न वैज्ञानिक, ऊं रो टिकाव है सृद्धा-भावना अर जनश्रुत्याँ रा धरातल पै । जनश्रुत्याँ भोले मनडे री अतिशयोक्ति होता थकां ही आँने आप नकार न सको, क्यूं के अै नायक रा चरित्तर रे अनुकूल ही हो सके है, प्रतिकूल नीं । विद्वान आँने 'अर्द्ध-सत्य' माने है ।

जूना जमाना में आत्म-कथा न इतिहास लिखणे री पिरथा ही नीं, जो भी प्रमाण मिले घणा दौरा अर अपरियाप्त । महापुरूषां पै किवंदत्या चाले मोखली, किण किण ने छाणा, कियां छाणा ? जो भी है साँच ने आँच न आवे । सैं तरां सूं समृद्ध अग्रवाल समाज आपूं आप ही जीतो जागतो साक्षी है क अश्यी उन्नत सन्तानां रा पितामह कश्या क होसी ?

हूं अग्रोहा तीर्थ री काँकरी खूंदी है ! आँख्याँ सूं धरती रे गरभ सूं नीसर्‌या खण्डहर न नव निरमाण देख्या है, पुराण अर दूजी पोथ्याँ में वाँरा बारा में जो भी क्यूं मिल्यो बाँचो है। सगला ने मिलार जो क्यूं बण्यो प्रेम सूं पुरस दियो। अतरी जरूर है क म्हारी बणतां सांतर हूँ ईं ने घणे सूं घणो बुद्धिगम्य रूप देणे रे साथ साथ अतीत रे मिस आज री समस्यावां रो निराकरण करणे री कोसीस करी है। फौज में नगारो न बात में हूँकारो. राजा शौणक सूं जिज्ञासावां उठवा र समझावणी शैली बरती है। तीन अध्याय न सात खण्डा में बंटी आ कथा किणी अंशा में नाटक ज्यूं भी बरती जा सके है, निश्चे ही ईंसूं सामाजिक साहित्य री कमी पूर्ति होसी राजस्थानी री प्रधानता होता थकां ही हिन्दी रे नजीक री बोलचाल री मिलवां भाषा ही राखी है, घणे सूं घणा लोग ईं ने समझर लाभ ले सके आहीज म्हारी भावना रही है। भाषा रो महत्व माध्यम सूं बेसी नीं है।

ईं कथा सूं जे अग्रवाल भाई आपरा पुरखां ने ओलख्या, वाँरा चरित्र सूं प्रेरणा लेर लाभान्वित व्हिया, समाज रो माथो ऊंचो हुयो तो हूँ आपरी मेणत ने सफल समझूंला।

–त्रिलोक गोयल

।। श्री महालक्ष्मी नमस्तुते: ।।

जग जामण, जग पालणी, लिछमी सहस प्रणाम।
अग्रसेन जी रे जियां, सारो सब रा काम।।

अथ : कथाकार श्री त्रिलोक गोयल उर्फ कवि जीजा उवाच :–

भौत भौत बरसां पैलां री बात है, एक राजा हो, राजा रो नाँव शौणक हो ! शौणक घणो पुण्यात्मा-धरमात्मा हो, पिरजा पालण सूं जो बगत बचतो राम रहीम में ही पूरो व्है तो, नित नेम सूं कथा पुराण सुणतो ! एक बर बै आपरा राजगरू ने बूझो—

राजा शौणक उवाच :–

हे परम भागवत श्री श्री एक हजार आठ श्री सूत जी महाराज ! जदां जदां भी परसंग आयो, आप श्रीमुख सूं ओ फरमायो क तेतीस करोड दई-देवतावां में महामाया लिछमी जी री भक्ति-उपासना रो सैं सूं बेसी अर अणूतो ही महत्व है। अब आप किरपा करर आ बताओ क कालांतर में कुण कुण बडभागी लिछमी जी री ध्यावना करी अर वाँ ने काँई सुफल मिल्यो ?

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजा शौणक ! आपरो ओ मांगलिक सुवाल जण जण रो कल्याण करवालो अर लोक-परलोक बणाहालो है। भविष्य पुराण री 'महालक्ष्मी व्रत कथा' में ईं रो महात्तम बखाणता थकां व्यास जी महाराज कह्यो है क जणा सत जुग में राजा हरिश्चन्द्र पै विपदावां रा डूंगर ढहगा तो गरूजणा रे बतावा पै बै घणे सरधा भाव सूं माता लिछमी जी रो पूजन-उद्यापन कर्‌यो, ईं री पुण्याई सूं वाँरा कलेष कट्‌या, बीछड्‌या लुगाई-टाबर मिल्या, न गयोडो राज-पाट आयो। ईंया ही द्वापर में पाण्डवाँ में भारी भिखो पड्‌यो, वांरा शुभचिन्तक भगवान श्रीकृष्ण आपरा मुखारविन्द सूं वाँ ने मात मातेश्वरी लिछमी री कथा सुणाई. जी सूं बै महाभारत रा जुद्ध में विजय प्रापत करी अर वाँ री सगली संकलाई मिटी !

राजा शौणक उवाच :–

हे ज्ञान शिरोमणे ! सतवादी हरिश्चन्द्र अर धरमराज युधिष्ठिर री कथावां तो जग जाणी है. आप सत जुग सूं सूधा द्वापर में आयगा. त्रेता ने लांघगा ! जे कोई ऊँ जुग में लिछमी भगत हुयो हुवे तो ऊँ री वारता सुणार ईं दासानुदास ने किरतारथ करो !

श्री सूत जी उवाच :–

हे जिज्ञासु प्रवर ! हूँ आपरे हिवड़े री उत्सुकता जाणे हो क आप निश्चे ही कोई नवादी ख्यात सुणबो चाओला जी सूं ही हूँ बीच रा जुगरी बात टालगो. तो अब आप इंछा मुजब राजा

रामचन्दर जी रा समै रो एक अश्यो वरतांत सुणो जी ने भौत कम लोग जाणे है। बो वरतांत है अग्रोहा नरेश छतरपति महाराजा श्री अग्रसेन जी रो, जो लिछमी जी रा अनन्य उपासक ही नीं हा, आपरो आखो जीवण ही वाँ रा चरण कमलां पै निछरावल कर राख्यो हो। विष्णु प्रिया कमला री अश्यी अमोध आराधना रे कारण ही वांने अतरी सुफलताँवां मिली। आप ईं कथा-वारता ने निष्ठा भाव सूं सावल सुणो आपरो निस्तार व्है जासी।

राजा शौणक उवाच :–

हरे ! हरे !!

❋ अथः अगुणि नाँव रो पहलो अध्याय सरू ❋

प्रथम अगुणि अध्याय में, जलम, परण री बात।
महादेव किरपा करी, सुरपति खाई मात॥

खण्ड १

श्री सूत जी उवाच :–

हे राज राजेश्वर ! त्रेता जुग में वैशलक-वंश घणो ऊँचो न नामी गिरामी हो। ईं कुल में वृन्द, गुर्जर, महिधर एक सूं एक बढता-चढता राजा-धिराजा व्हिया जो आप रा नाँव सूं

मोटा मोटा नगर बसाया. वाँ रा जस रो डंको चारूं कूंट बाजतो. कीरती री धजा फहराती। ईं ही ऊजला कुल में आगे जार परताप नगर रा राजा बल्लभसेन व्हिया. वाँरे कुमुद कुमारी नाँव री बड़ी ही बडी बेटी. दूजा लम्बर पै अग्रसेन न तीजो सन्तान लाडेसर सूरसेन हा !

मासोत्तम मासे, आसोज मासे शुक्ल पक्ष री पडवा ने शुभ घडी, शुभ नक्षत्र, ब्रह्ममौरत में अग्रसेन जी जलम्या, जलम्या काँई अवतर्‌या। बेटी री पूठ बेटो. घरमें सोनेरो सूरज उगियो, कुल में चानणो व्हियो, थाल बाजा, दान-पुण्य, ऊच्छव-बधावा रो पार नी, हरष री बाढ आयगी ! राजा राजज्योतसी ने बुलार टाबर री जलम पतरी बणवाई। गिरह नखतरां री गणना करर पिण्डतजी दंग रहगा। पोथी पानडा साँवटता रूई रा फाहा सा टाबर रा सुकोमल चरणा ने माथे लगार राजा बल्लभसेन ने बोल्या—"हे पृथ्वी पते ! ज्योतिष रो काम करतां करतां म्हारे काला पै धोला आयगा पण अश्यी जलम-कुण्डली हूँ आज तीं न देखी। ओ बालक काँई जलम्यो है सत पीढ्यां रा पुण्य उदै हुया है, ओ साधारण आत्मा नीं है। शंख, चक्र, पद्म सा शुभ सैनाण ईं री हथेल्यां पगथल्यां में है, भल भलाट करती दीपती लिल्लाडी, चन्दरमा जी सो रूप ईं रा गिरह अश्या उच्च का पड्या है क ओ चक्रवर्ती महाराजा होर कुल रो नाँव उजागर करसी, आपरा नाँव सूं एक सुविख्यात नवो वंश चलासी अर सुफलतावां इण रा चरण चूमसी। बिरमा-विष्णु-महेश तिरदेवां री किरपा रे साथ साथ जगत-जनणी लिछमी रो माथे हाथ रहसी। ईं रा गुण अर भाग बखाणनो म्हारी वाणी री सामरथ सूं परे है। थोड़ा में घणी अर सार रूप बात अतरी हीज है क ओ सिडीगली पुराणी परम्परावां ने तोडर परगति रा पंथ पै

आगूंच रहसी, अग्र रहसी, ईं सूं ईं रो अकारात्मक नाँव अग्रसेन राखणो ही उपयुक्त है। ओ ही सरनाँव होर जथा नामें तथा गुणे व्हैसी।

राजा शौणक उवाच :–

हे महामुने ! मने सूल्याणी ध्यान है क कथा रे सरूपोत में ही वल्लभसेन जी रे ईं पुत्र रत्न उत्पत्ति ने आप जलम न कहर अवतरण कह्यो हो। सांचाणी ही अश्यी अभूतपूर्व आत्मावां धरती अर कुल रे कल्याण अर मान बधावण खातर ही आवे है।

श्री सूत जी उवाच :–

ब्रह्मवाक्यम् जनार्दनम् ! बिरामण देवता रा मूंडा सूं नाम करण संस्कार व्हैतां ही, अग्रसेन जी री जै जै कार सूं महल-माल्या गूंज उठ्या। दसूं दिसावां में नौबत नगारा बाजा, फुलडां री बिरखा हुई न राजा आनन्दातिरेक सूं गद् गद् होर जोसी जी ने ही काँई पुरजन-परिजन सैं ने मनचायती भेंट पूजा देर राजी कर्‌या !

पूत रे पग पालणे दीखे ऊजले पख रे चांद री कलावां ज्यूं टाबर दिन-दूणो. रात-चौगणो बधतो ग्यो, चढते सूरज में पसरती कँवल री पांखड्यां ज्यूं खिलतो ग्यो ! ऊमर गैल ऊँने सद्गरू रे आश्रम में विध्याध्ययन खातर भेजो गयो। थोडा ही दिनां में बो शस्त्र-शास्त्र दोण्यां में पारंगत होर राजधानी बावड्यो। जुवराज ने सैं तरां जोगां जाणर, आपरो बुढापो नेडे देखर नृपति वल्लभसेन आपरो राजपाट पच्चीस बरसां रा अग्रसेन ने संभलार वाणप्रस्थी व्हिया !

राजा शौणक उवाच :–

हरे ! हरे !! सुपातर सन्तान ही कुल री शोभा है, ऊँ सूं ही गिरस्थी री नाव पार लागे, जीवता माता पिता ने सुख दे र मर्‌या ने पाणी !

खराड ?

श्री सूत जी उवाच :–

हे राजा शौणक ! चढती जुवानी अर भरपूर धन-वैभव होता थकां भी अग्रसेन ने नांव ही राजमद न हुयो. कोई कुलक्खण न आया । बै आपूं आपने पिरजा रो स्वामी न सेवक समझता हा, राजतंत्र रो गोद में गणतंत्र पले हो ।

राजा शौणक उवाच :–

हे बिरमज्ञानी श्री सूत जी महाराज । राजतंत्र री गोद में गणतन्त्र पले हो, चिण्यो ईं रो खुलासा करो, म्हारे आ अजब गजब री बात पल्ले न पडी ।

श्री सूत जी उवाच :–

न आ बात अजब गजब री है न असम्भव । हां दोरी जरुर है । अग्रसेन जी सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न होर भी कदांई मनमानी न करी, सगला अधिकार गण सभावां ने सूंप राख्या हा, राज ने पिरजा री पवित्र धरोहर मानता हा । ऊँ जुग में लोग सत्ता-लोलुप नीं राम-भरत सा

सिंहासण त्यागी हा । सजीव मिनख रो मोल निर्जीव धन सूं बेसी हो । आगे जार आ मानता साव ही ऊँदी व्है जासी । आध्यात्मिकता पै भौतिकता, परमारथ पै स्वारथ, मतबल मिनख पै मोह माया हावी रहसी । आदर्श, सिद्धान्त, मिनखाई गी दैड रे पींदे लोग अनीत्यां कर कर नीत्यां रा सुनेरी आवरण ओढसी, पिरजातंत्र री आड में एक तंत्र पनपसी, पदमद में आंधा होर सत्ता ने बपौती समझर ऊँरो दुरूपयोग करसी, सुख-शान्ति रा दरसण दुरलभ व्हैसी अर मुलक न्यारा न्यारा दलां में बँटर गलातीं दलदल में धँस जासी ।

राजा शौणक उवाच :–

नारायण । नारायण ।। अश्या कल-जुग री कल्पना सूं ही कालजो कांपे । जठे राजा-पिरजा में बाप-बेटा रा सम्बन्ध न रहर अविश्वास-असंतोष पनपे, खींचताण हुवे बो अनुशासन हीन शासन कीकर चाले ? कदांतीं चाले । धोबां धोबां धूल ऊँ जमारा पै ।

श्री सूतजी उवाच :–

हे धरणीधर ! पापरो घडो भर्‌यां ही फूटे, जुग रो तो खाली नांव ही हुवे है, मिनखां रा ऊँच नीच करम ही सतजुग-कलजुग बाजे । तो हूँ आ बतार्‌यो होक अग्रसेन जी रा राज में पिरजा हर तरां सुखी ही, सम्पन्न ही, अभय ही अर चिन्तावां सू मुक्त ही । न्याव-नीतिरी दुंदभी बाजती, नाहर-छाली एक घाट पाणी पीता अर प्रकृति मिनखां ने सुपात्र जाणर दोण्यू हाथां सूं आपरो खजानों लुटाती । धन, धरती, धिराणी रा लोभ सूं महाराज आगे होर किणी पै

आक्रमण न करयो पण जबरण थोप्या गया जुद्धां सू पग पाछे न मेल्यो अर दुसमणा रा दांत खाटा कर्‌या, ईंयां चालीस बरसां री ऊमर ती पूरण बिरमचारी रहर धरम-करम सूं राज-काज अर जन-हित में लाग्या रह्या ।

राजा शौणक उवाच :–

हे गुरूदेव । इन्द्रीय जीत व्हैणो, मनडे ने बस में राखणो रिश्यां मुण्यां तांई ही दुरलभ फेर अग्रसेन जी रे तो चारूँमेर काई-चिकणाई फिसलण ही फिसलण ही फेर ही बै सँभल्या रह्या, नांव ही न डिग्या अश्या साधक बिरला ही हुवे है । वांरे मात पिता न धन है ।

श्री सूतजी उवाच :–

हे नृपते । नर-नारी रो सम्बन्ध डिगणो अर चरित्र-हणन नी प्राकृतिक मांग री पूर्ति है, सहज स्वभाविक है । धरम रा पालण, पितृरिण सूं मुक्ति, कुल री बढोतरी अर सृष्टि चालण ती गिरस्थी ने ब्याव करणो भौत जरूरी है पण सो क्यूं मर्यादित न सामाजिक मान्यतावां मुजव व्हैणो चायजे । जिनगाणी रा लांबा गैला में, जीवण साथी हुयां सूं जातरा सोरी बीते । तो महाराज चाणचक ही अश्यो संजोग बण्यो क नाग-लोक रा स्वामी नागराज कुमुद आपरी रूप, शील, गुण निधान कन्या माधवी रो स्वयंबर रचो । देस देसान्तरां रा देव, यक्ष, नाग, किन्नर राजा-महाराजावां ने सादर नूत्या गया ! भावी प्रबल हुवे है, ऊँरी प्रेरणा सूं आमंत्रिता अग्रसेन जी ही बठे पूग्या ।

आभे री बीज अर सावण री तीज सी सजी सँवरी राजकन्या माधवी हाथां में वर-माला लियां सात सहेल्यां रे बीच मँदरी मँदरी चाले ही र चारण-भाट एक एक प्रत्याशी रो परिचे देता थकां वांरा गुणगाण करे हा ! स्वयंवर-सभा री बेजोड शोभा न रति रो रूप पाणी भरे अश्यी नाग सुता माधवी, जाणे सुपनलोक री कल्पनातीत सरजणा ! हूँश्या हूँश्या नाडकी आगे करता सगला ही पावणा ने टालती जणा बा अग्रसेन जी रा आसण कणे पूगी तो वांरो नांव, ठांव, प्रसस्ति सुणता ही वरमाला महाराज श्री रा कण्ठा में पिरादी । कंवरी रा वर-चुणाव री सगला ही सराहण करी ! वाह वा करी !!

राजा शौणक उवाच :–

भगवन् ! बार आप फरमायो क स्वयंवर सभा में देव, यक्ष, नाग, नर, किन्नर सैं ही नूत्या गया हा, जदां तो बठे वरूण, कुबेर, चन्द्र-इन्द्र सैं ही पधारया व्हैला, वांरे थकां माधवीजी अग्रसेन जी ने ही दाय कीयां करयो ? कांई बै आं सूं ही ऊंचा हा ?

श्री सूतजी उवाच :–

राजन ! दाय करबो, न करबो काम मनडे रो है । मन आगे कोई तरक न चाले । फलाणो ढीमका ने क्यूं दाय आयो ? ऊँ री चावणा रो के कारण है ? आ बो खुद ही न जाणे फेर दूजा ने के बतावे ? अै सैं मनमानी बातां है, प्रीत बाही है जो करी न जावे, आपूं आप व्है जावे । पाछला भौ रा क्यूं लेणा-देणा, क्यूं संस्कार भी ईं में आडा आवे । रही ऊँच-नीच री बात तो

ऊँच-नीच होबो जलम सूं नीं करम सूं है। निश्चे ही भूलोक वासी अग्रसेन जी री करणी आं आकासलोक हाला देवतावां सूं ऊँची ही, पण ईं परण में दो मोटा कारण और भी हा। पहलो तो ओ क राजकुमारी माधवी केई जणा सूं केई प्रसंगा में आ सुण चुकी ही क ईं बगत धरती पै अग्रसेन नांव रो एक परम प्रतापी राजा है। वां रो सुजस सुणर बा मन ही मन वां रो वरण पेलां ही कर चुकी ही, दूजो ओक स्वयंवर री पिरभात ने जणा बै कुलदेवता सेस-नाग री पूजा करबा मिन्दर गई, वां सूं आछा घर-वर री कामना करी तो आसीस अर वरदान रा रूप में ऊँरे हिवडे में अग्रसेन जी सूं अनदेख्यो अनुराग जाग्यो। असल बात तो आही है क अग्रसेन माधवी रो साथ जलम जलम रो हो। होणो ही हो!

राजा शौणक उवाच :–

जोडा तो विधाता रा बणायोडा ऊतरे है महाराज! प्रयत्न अर परिस्थियां तो निमित्त है।

श्री सूतकी उवाच :–

आ सही है क विधि-विधान ने कोई बदल न सकें फेर भी शुभ कामां में विघन आवे ही है। सीता स्वयंवर में जीयां कुपित होर परसुरामजी परसो फडफडाता आया हा बीयां ही ईं में भी एक खलको हुयो। वर-माला होतां ही जठे और सगला मिजमान आपको सो मूंडो लेर चलेग्या वठे देवराज इन्द्र रे लाय-पलीता लाग गा, बो ईंया, ऊछल्यो जाणे ताता तेल में पाणी रा छांटा पडचा। आपूं आपने सैं सूं समरथ समझ हाला री मन चावती चीज दूजां ने ले

जाता देखर बो ईर्षालु, विलासी न लोलुप आपरी मरजादा में न रह सक्यो, जोर जबरदस्ती पै आगो! अग्रसेन जी ऊंने घणी ही ऊंच नीच समझाई क जे मने पैलां ही आपरी मनशा मालम पड जाती तो मिंतर रे खातर हूं एक माधवी तो कांई सहस माधव्यां छोड सके हो, बगत पडचां बायला तांई पिराण भी देणा पडे तो कम है, पण वर्योड़ी लुगाई ने, मंगेतर ने मांगणो र देणो दोण्यू ही अनीति है, अधरम है। अग्रसेन रे जीते जी कोई ऊँ सूं क्यूं खोस र ले जावे अश्यी कूंख हाल फली ही नीं।

राजा शौणक उवाच :–

हे राजरिषि! ओ तो अणचीत्यो ही बैधो आयगो, रंग में भंग होगो, आगे के हुयो जो आप सविस्तार बताबा री महर करो।

श्री सूतजी उवाच :–

महाराज! इन्द्र आपरो बजर उठा लियो र अग्रसेनजी तरवार। स्वयंवर सभा रणगांण बणबारी त्यारी करली, दिग्पाल धर धर धूजण लाग्या, "अब के होसी? अब के होसी? रोहाको पडगो। इयां दो महान सगत्यां ने टकराती देखर विश्व रो अमंगल जाणर जगत जामी बिरमा जी परगट हुया।

राजा शौणक उवाच :–

नमो ब्रह्माय : नमो ब्रह्माय :

श्री सूतजी उवाच :–

बिरमा जी दोण्या रा हाथ पकड्या, इन्द्र री उछरंखलता पै ऊँने फटकार्‌यो "छीः कामदेव रा स्वामी अर अप्सरावां रा अधिपति होर अश्या अशोभनीय काम करो धिक्कार है ! थू है !!" अग्रसेन जी ने समझायो क मितर सूं राड करणी ठीक नी है। दोण्यू मन रो मैल त्याग र गले मिलो।"

ऊं सगला रा बापरी बात कुण टालतो ? शिखर-समझौतो मानणो ही पड्यो। अग्रसेन जी रा हिवडा में तो पैलां ही क्यूं आंट नीं ही, जीसूं बै तो राजी होर मिल्या, पण सुरपति ने झकमार र ऊपरी मन सूं मिलणो पड्यो, बो गांठ बांध र भुलसतो भुलसतो ही बठे सूं बीर व्हियो।

राजा शौणक उवाच :–

दबी सूं करी गई संधि कदांई कारगर न हुवे। मिलाप तो मनडे रा है, तनडे रा नीं। चिथ्योडा नाग ज्यूं चोट खायो इन्द्र निश्चे ही क्यूं न क्यूं कुबध करी व्हैली ?

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजन ! आपरो अंदेसो खरो है। अठी तो नागराजदूणी उमंग सूं, भौत धूमधाम सूं बेटी रो ब्याव कर्‌यो। अग्रसेन जी ने कह्यो "हूं आखी धरती रा धन रो मालक हूं आपरे

जँचे जो माँग ल्यो" पण अग्रसेन जी मुलकर साव नटगा क ब्याव सावा में लेबा-देबा ने महत्व देणो मने नाँव ही दाय नीं है। सम्बन्धां रा इमरत में आ वणिक-बिरती विष घोलवाली है, आ कतरणी स्नेह-सूत्र ने काट नाखे। आपरी किरपा सूं म्हारे कीं कुमी नीं है, अर जे कुमी भी हुवे तो दई-दायजा सूं किणी रा पूरा न पडे।"

पण नागराज क्यांको मानतो ! आपरी लाडाकोडां बेटी ने कोरे कालजे कियाँ काढतो ? क्यूं काढतो ? गाड़ा भर भर र धन-धान, गाभा-गहणा न घणी घणी आसीसां देर आली आँख्यां बाई ने बिदा करी ! बठी रीसां बलतो इन्द्र आपरा अनुचर बादलां ने बुलार हुकम दियो क अग्रसेन रा राज में बूंद ही बिरखा न व्हैणी चावे। अश्यो भयंकर काल पडे क वां री सगली हेंकड़ी नीसर जावे, इन्द्र सूं अडबा रो फल पावे !

राजा शौणक उवाच :–

हे रिसिराज ! आ तो सुरपति रे ओछे पण री हद व्है गी, मितरता रे नाँव पै कलंक व्हैगो। सगति रो दुरूपयोग औरूं किणने केवे है ?

श्री सूतजी उवाच :–

विनाश काले विपरीत बुद्धे ! हे पिरथीपाल ! जणा अग्रसेन जी आपरी पिरजा ने दाणां दाणां ताँई तरसताँ देख्या, खेतां रा हिवड़ा न नंदी तलावाँ री आँख्या फाटी देखी, पसु-पांख्यां री लोथां सिडती देखी तो बै देवराज री बदनियत जाणगा। वांरे दुख रो पार न रह्यो ! और

क्यूं उपाय न देख र राज काज नवोढा माधवी न मंतर्यां रे भरोसे छोड़ र बीहड़ बन में नीसरगा। सुन्नाड में जार विलाप करता कुरलाबा लाग्या "हे अन्नपूर्णा लिछमी ! थूं आखे बिरमांड री जामण है, कीडी ने कण न हाथी ने मण थूं ही देवे, सगलां रे भरण पोषण रो भार थारे ही माथे है। थूं मां होर अतरी करडी कियां व्हैगी ? म्हारी अरदास सुण, पिरजा रो संकट टाल, जे म्हारे सूं क्यूं गुन्नो हुयो हुवे तो मने दण्ड दे, बापडी निरपराध जनता ने क्यूं सतावे ?

राजा शौणक उवाच :–

हे तपोनिधे ! सुणा हांक, सांचे हिवड़े सूं करी पुकार कदांई अकारथ न जावे, फेर मां तो करूणामयी हुवे है, बेटे ने बिलखतो कियां देखे ? भगवती निश्चे ही अग्रसेन जी पै किरपा करी हुवेली ?

श्री सूत जी उवाच :–

हां महाराज ! तत्काल आकासवाणी हुई क "हे अग्रसेन आप जग सूं न्यारी, शिव री प्यारी काशी में जार महादेव जी री उपासना करो' ईं काल रो विधूंस बै महाकाल ही करसी।" अदृश्य मातेश्वरी ने प्रणाम अर वां री आज्ञा ने सरमाथे करर अग्रसेन जी वां की वां पगां कासीजी पूग्या न महादेव जी री घोर तपस्या करी। भोले भण्डारी भावना रा भूखा है, औघडदानी है, परसन्न होर परगट्या, अन-धन री बिरखा करी न कह्यो "क इब थारे राज में कदांई काल न पडसी, भण्डार सदा भरपूर रहसी।"

गद गद होर अग्रसेन जी वां रा चरण पखारचा न अरदास करी क "हे दीनानाथ ! पैलां तो मने ओ विश्वास द्यो क जदां जदां भी आपने याद करूं, दरसण देश्यो।" माथे वरद् हस्त रख र भगवान शंकर 'तथास्तु' कह्यो !

दूजी इंच्छा आ है क "हूं इन्द्र जीत व्हैणो चाऊं हूं।"

महादेवजी मुलकर कह्यो "आपरी कुल देवी लिछमी जी है, वांने ही राजी करर ओ वरदान माँगश्यो तो आछो रहसी।"

'जो आज्ञा' कहर अग्रसेन जी वाँरी जै जै कार करता रह्या, न बै अन्तर ध्यान व्हैगा।

राजा शौणक उवाच :–

बम बम भोला ! हर हर महादेव !! नमः पार्वती पते.....

।। इति श्री अगुणि नाँव रो पैलो अध्याय पूरण व्हियो ।।

❋ अथः उजास नाँव रो दूजो अध्याय सरू ❋

इण उजास अध्याय में, मिल्या शाप, वरदान ।
बेटा ब्याया, हरि मिल्या, अग्रोहा निर्माण ।।

खण्ड १

श्री सूत जी उवाच :–

तो राजा शौणक ! ईंया इन्द्र-कोप सूं पीड़ित पिरजा ने अन्न जल बिना त्राहि ! त्राहि ।। करतां छोडर अग्रसेन जी बन में सिधार्‌या हा, अर पाछा बावड्‌या तो शिव किरपा सूं सोरी सुखी लाधी । अठी सूं ओसाण आयाँ, राज काज सूं फुरसत पार एक बर अग्रसेन जी लाव-लस्कर रे सागे घणे जंगल में शिकार खेलबा सिधार्‌या । धर कूंचा धर मजलाँ चालताँ चालताँ बावनी बन में नीसरगा । दन में रात जश्यो अंधारो, न भाँत भाँत रा जंगली जीव-जन्तुआं री डरपावणी अवाजां ! चाणचक ही एक कौतक व्हियो । अग्रसेन जी रा धौंसाँ री धमक सूं एक खूंखार नारणी रो गरभपात व्हैगो । जलमतो ही शाव ऊछलर महाराज श्री रा हस्ती माथे थाप दी न धरती पै पडर शान्त व्हैगो ! प्रसव पीडा सूं आकल बाकल सिंहणी क्रोध में आर सराप दियो क "म्हारी कूंख उजाडणियो आखो ऊमर निपूतो रहसी ।" ईं अण चीत्या बैधा ने देखर अग्रसेन जी हस्ती हौदे सूं हेटे ऊतरया, गलगल्यां आर सिंहणी ने हाथ जोडर अरदास करी क

"माता ! म्हारे सूं निश्चे ही अपराध व्हियो है, पण हुयो है अणजाण्यां । हूं तने सताबा नीं, मृगया खेलबा आयो हो ।"

मिनख री बोली में सिंहणी बोली "राजन् ! जंगल रा जीव भी तो आपरी हीज पिरजा है । बन अर बन रा निरीह जीवाँ रो संरक्षण भी तो राज-धरम है । अपराध अपराध है जाण्यो हो चावे अण जाण्यो ऊँ रो दण्ड तो भोगणो ही पडे । म्हारे मूंडे सूं नीसरचो सराप मिथ्या न व्है सके ।"

मिथ्या तो न व्है माता । पण ईं री क्यूं न क्यूं गलो तो काढणी ही पडसी, निपूता रो मूंडो देखणो ही अपसुगण । आप हुकम दचो बोही प्रायश्चित्त करबा न दास त्यार है ।

जंगल री राणी जाणगी क महाराज निष्पाप है, जो क्यूं व्हियो है भोलप में व्हियो है । बा वांरी पिछतावणा सूं आली आंख्या देखर पसीजी बोली-"राजन् ! आप वैश्य होतां थकां भी राज-धरम रे कारण करम सूं छत्री जश्यो आचरण राखो हो । जुद्ध-शिकार, हिंसा-हत्या सैं ही अपना राखी है, जे थे ईं छिन सूं ही अहिंसा-व्रत ल्योर पूरी तरां वैश्य जीवण स्वीकारो तो सराप मिट सके है, छत्री रा बाणक में तो निपुत्रा ही रहश्यो ।"

अग्रसेन जी ऊँ की ऊँ टेम बाण कबाण बगाया न तरवार तोडर जीव दया अपणाई । छत्री-धरम त्यागर वैश्य-धरम अंगिकार कर्‌यो, जणा जार नारणी संतुष्ठ होर वर दियो क "इब आपरो परवार आकास रे तारां ज्यू अकूत व्हैसी, जगमगासी, अग्रवाल बाजसी न आँने छतर-चँवर, नौबत-निसाण सा राज-चिन्ह धारणे रा अधिकार रहसी ।"

अग्रसेन जी सिंहणी री जै बोल र भुजा उठार आ घोषणा कीधी क आज से म्हारे राज में अहेर, आक्रमण, मांसाहार सैं वर्जित । गौ, गुरूजण, दीन-दुखी अर अतिथ्यां री सेवा करणी, खेती-बिणज, दान-धरम दिनचर्या, एक दूजा रे दुख-सुख रा साझीदार होर भाई चारा रो विस्तार करणो, कोई ने ऊँच-नीच, छोटो-मोटो न मानणो, जश्यो आपरे तीं चावो बश्यो ही दूजा रे साथ ब्योहार करणो अहीज मानतावां रहसी ।

राजा शौणक उवाच :–

हे महाराज ! अै तो वैश्यां रा जलम जात गुण है, मूलभूत धरम करम है, मिनख पणे रा आधार न सृष्टि रा सार है, अग्रसेन जी आँने बढाओ देर भौत ही चोखो कर्‌यो, मिनखाई रो मैल हर्‌यो, पण इचरज तो ओ है क सिंहणी रो भ्रूण जलमतो ही महाराज रे गज माथे थाप कियां दी, ऊँ नवजात में अतरी सगती कीकर आई ?

श्री सूत जी उवाच :–

हे राजा शौणक ! ओ को ओ सुआल अग्रसेन जी भी आपरा पिण्डतां ने बूझो बाँ ने भी ई अद्‌भुत काण्ड पै घणो चम्भो व्हियो हो । पिण्डताँ रो कहणो हो क 'महाराज ! ओ ई धरती रो परताप है, ई रे परभाव सूं ही माँस रो लोथडो हस्ती रे माथे वार करणे में समरथ व्है सक्यो । आ माटी सोनो है, ई भौम पै जो भी कारज कर्‌यो जासी आशातीत सुफल व्हैसी !

राजा शौणक उवाच :–

हाँ भगवन ! न्यारी न्यारी ठोड रो न्यारो न्यारो महात्तम तो मानणो ही पडसी, बारें सूं धरती बा की बा होता थकां ही कोई जगाँ तीरथ व्है जावे है, कोई रतनारी हुवे, कोई कोयलां री खान ! धरती माँ रा रूप अनेक ।

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजन ! महाराजा अग्रसेन जी ऊँ ही पुण्य धरा पै महामया लिछमी ने राजी करणे सारूं घोर तपस्या सरू करदी । भूख-नींद. सियालो-ऊन्हालो, कीं री ही चिंता न कर्‌र साधना सूं तन ने कांटो अर मन न भाटो कर लियो । इन्द्र रा भेजोडा तप भंग करबा रा विसेसज्ञ कामदेव-मैनका-वसंत सैं ऐडी सूं चोटी तीं रो जोर लगार थाकगा पण महाराज नांव ही न डिग्या । वां री अश्यी अडिग भगती देखर लिछमी जी ने छीर सागर छोडर आवणो ही पड्‌यो कंवल फूल सूं भींटर समाधि तोडी । दोय जुग पछे अग्रसेन जी री पलक्यां खुली ही । काती मीनां री मावस री घोर काली रात में, दूधां धोया उजास में, इमरत घट लियां साक्षात महा-माया मुलकती दीसी ! मां बेटा रो ओ ममतालु मिलण एक अनूठो ही दरसाव हो ।

महाराज सास्टांग दण्डवत करर सात परिकरमा करी, न बार बार वां री स्तुति करबा लाग्या । माथे हाथ धरर विष्णु प्रिया वर माँगबा री कह्यो । हाथ जोडर अग्रसेन जी बोल्या-"माँ !

देवराज इन्द्र म्हारे हाथ धोर पाछे पड्यो है, राज में अशान्ति अर दुखां रो विष घोलबा पै उतारू है आप ऊँने म्हारे बस में करो ।"

लिछमी जी वाँने अभयदान दियो न कह्यो क "वत्सा थारे नांव सूं पिरथी पै एक नुवो वंश उजागर हुवेला जो सगली जात्यां में सिरोकार व्हैसी । बारे सूं एक दीखता थकां भी म्हारा मांय सूं तीन रूप है सत, रज अर तम ! त्याग सूं सत, भोग सूं रज अर लोभ सूं तम । पहला दो रूपां में जदां ती थारी सन्तान म्हारी ध्यावना करसी, लाभ रे सागे शुभ जुड्यो राखसी, हूं वाँ रो साथ कदांई न छोडू, कुलदेवी रहर प्रतिष्ठा, वैभव अर सम्पन्नता सो क्यूं बगस श्यूं, आछी तरां पालणा करश्यूं, पण आगे जार ज्यूं ज्यूं लोगां री नीत खोटी होती जासी, मनशा जश्यी दश्या व्है जासी । हाथां पग में कवाडी मारणे रो के इलाज ? अब आपने म्हारी एक आज्ञा है क कोल जाति रा विध्वंशक कोलपुर नरेश महिरथ री कन्यावां रो पाणिग्रहण करो वां री बेटी सुन्दरावती अर ऊँरी भैणा चाँद चीरर काढी हुवे अश्यी फूठरी न सुसंस्कारां सूं युक्त है, आपने पति रूप में पाबा ने जपतप कर री है । ईं सम्बन्ध सूं थारा राज न कुल री बढोतरी व्हैसी, विश्व कल्याण व्हैसी ।

अग्रसेन जी वांरा पग पकड़ लिया, "माँ ! आपरो हुकम सरमाथे पण मने ईं मायाजाल में फंसाणे रो के कारण है, म्हारी तो एक पत्नीव्रत में हीज आस्था है ?"

लिछमी जी सावल समझायो "बेटा ! परिस्थित्यां रे साथ आस्थावां ने भी बदलणो पड़े है । ईं ब्याव रो एक लूंठो उद्देश्य है, यूं जीवण री व्यवस्था न उन्नति खातर न्यारा न्यारा

वर्ग अर जात्यां भलांई हो पण असल बात आ है क आखी मिनख जात एक है । भिन्नता में एकता न देखहाला मूरखां रे कारण पीढ्याँ दर पीढ्याँ सूं नाग जाति न आर्य जाति में वैमनश्य चल्यो आरयो है, ईं नाता-रिस्ता सूं वा आँट दूर व्हैसी न दो साव ऊँदी संस्कृत्यां रे यूं एकमेक होबा सूं आखी जगती रो भलो व्हैसी, आ गंगा थारे ही हाथां आणी है ।

"जश्यी माता जी री मरजी" कहर अग्रसेन जी एक अरदास औरूं करी क "जियां आप म्हारे पै किरपा करर दरसण दीन्हो बियां ही तिरलोकी नाथ भगवान विष्णु रे दरसणां री म्हारी चिर लालसा है, बा पूरण व्हैणी चावे ।"

भगवती मुलकी ! "आ बां री मरजी अर आपरी कामना पूरती रे जतन री बात है, बाप बेटा रे बिच्चे मने मना घींसो" अतरी कहर चंचला लिछमी छू मन्तर व्हैगी न अग्रसेन जी कोलपुर जार बैसाख मास री मृगशिरा नक्षत्र में वां नाग कन्यावां सूं ब्याव रचाया । थोड़ा दिन राज-काज न घर-गिरस्थी ने सँभालर वांने विष्णुजी री तपस्या तांई पाछो बन में आणो हो ।

राजा शौणक उवाच :–

हे श्री सूत जी महाराज ! इब तो देवराज इन्द्र री अकल ठिकाणे आगे व्हैली ?

श्री सूतजी उवाच :–

हां राजन ! जी पै लिछमी जी री छतर-छाँया हुवे ऊं रो सहस सुरपति ही बाल बांकों न कर सके । सुर, असुर, मिनख कोई हो ऊँ री 'मैं' ही ऊँने खावे है, रावण रो नाश ही अहम सूं

व्हियो । 'मैं देवराज हूँ ! अग्रसेन म्हारे आगे के है ?' ओ थोथो घमण्ड ही ऊँने डुबोयो । इन्द्र सू रूष्ठ हुई भगवती पाछी बैकुण्ठ पूगी तो आगे विष्णु जी कने बैठा नारदजी दीख्या ! नारद जी परणाम करर वांरी नबज टटोली, 'मातेश्वरी री वात्सल्यमयी आंख्यां आज लाल ताती क्यूं ? किण बडभागो पै किरपा र किण हतभागी पै कोप करर आ री हो ?'

तमतमाता लिछमी जी बोल्या–'देवरिसि ! आपरा देवराज मदांध होर म्हारा भगत अग्रसेन ने सतारचा है, ऊँ मंदमति रा कुकर्म ऊँ रो सर्वनाश कर नाखसी !

राजा शौणक उवाच :–

हे प्रभु ! गोटक्या लडाणा नारदजी तो लापसी में लूणर बलती में पूलो न्हाकता ही आया है, वांने ईं राड सूं घणो मजो आयो हुवेलो, बै जरूर ईं लंका-काण्ड में क्यूं न क्यूं कुचमाद करी हुवेली ?

श्री सूतजी उवाच :–

नहीं राजन ! नारद जी तो ब्रह्मरिशि है बै तो सगलां रो कल्याण हीज करे है । वांरा काम करबा रा ढंग अश्या अणूता र रोचक हुवे है क लोग वांने भरम सू गलत समझे ! बैतो हर उलझी बात ने सुलझाई ही है । ब्रह्मपुत्र नारद लिछमी जी री स्तुति र इन्द्र री भर्त्सना करर वांरा क्रोध ने शान्त कर्‌यो न कह्यो–'आप ऊं अधम ने माफी द्‌यो ! ईं समस्या ने म्हारे पै छोड़ो हूं सैं सुलटा देश्यूं !

सूधी आंगली ही घी नीसर जावे तो डोढी क्यूं करणी । लिछमी जी नारद जी री खिमता जाणे हा बै वांरे भरोसे ओ भार छोडर विष्णु जी ने कह्यो, "स्वामी । अग्रसेन आपरा दरसणा री उत्कट अभिलाषा राखे है, बीहड बन में कठिन साधना करर्‌यो है आप ऊँने दरसण देर किरतारथ करो ।"

चारभुजा नाथ मुलक्या, बेटे री सिफारिश ? प्रिये ! हठी बेटा ने माँ ही सूल्याणी समझा सके है, आप वांने तपस्या सूं बरजो, ईं सूं राज धरम में बाधा पड़े है, बगत आयां हूं आपूं आप ही वां ने दरसण देश्यूं ।

राजा शौणक उवाच :–

हे सर्वज्ञ सूतजी महाराज ! महामुनि नारद जी ईं झगड़ा ने कियां निबटायो न विष्णु जी अग्रसेन जी ने दरसाव कदां दियो ओ आगे रो रोचक वरतांत सुणाबा-रो अनुग्रह करो ।

श्री सूत जी उवाच :–

तो सुणो महाराज ! नारद जी भगवन्नाम रौ जाप करता, करताल खडाऊ खडकाता सूधा इन्द्रलोक पूग्या, बठे बारूं मास ही बसंत रहवे है । ऊँ मनमोहक वातावरण में शचि-पति इन्द्र नन्दन कानन में पारीजात पुष्प सूंघता, सोम रस पीता, अपसरावां रे बीच बिचरे हा । नारद जी री पूग सैं ठोड, बै बेरोकटोक बठे ही जार नारायण ! नारायण !! करी । अगवाणी करर

इन्द्र देवता वाँने मान सम्मान सूं बिठाया, बूझो कठी सूं पधारणो व्है र्‌यो है ? नारद जी डोढा डोढा हँश्या, "बहता पाणी र रमता जोगी रो के ठाणो ? बैकुण्ठ लोक पिरथी लोक, केई लोक लोकान्तरां में भँवता थकां आपरा कुसल मंगल जाणबा अठी आ नीसर्‌या ।"

अमरेस दम्भ सूं बोल्या–आपरे चरणां रा परताप सूं अठे तो सदा बहार है, आप तो पिरथी-लोक रा समंचार सुणाओ, बठे तो भयंकर काल पडर्‌या हुवेला, अग्रसेन जी रे दांता पसीनों आर्‌यो व्हैलो ।

नारायण ! नारायण !! नारद जी हडहडार हाँश्या । देवराज ! आप भारी भरम में हो आपरी आँख्या आगे दुरदिन न दुरबुद्धि रा काला जाला आ मेल्या है जी सूं क्यूं ही न सूझे । अजी-आपरा पटक्योडा काल ने तो कालां रा काल महाकाल महादेव जी अकारथ करर वाँरा भण्डार अन धन सूं सदा भरपूर रहणे रो वर दे दियो है । आपने बस में करबा तांई बै जो लिछमी जी री आराधना करी बा सुफल व्हैगी । शिव अर विश्वामित्र तीं री तपस्या भंग कर हाला आपरा अनुचर मैन अर मैनका दोण्यूं ही वांने नांव ही न डिगा सक्या । महामाया लिछमी वांपै राजी होर केई वरदान ही न दिया, आपरो सर्वनाश करबा पै कमर कसली है । तिरिया हठ आगे तिरदेवां ने ही नैणों पड़े, आप कश्या खेत री मूली हो ।

अतरी सुणतां ही इन्द्र रा सगला नशा हिरण होगा, हाथ पग फूलगा । बै आ सुपना में ही न सोची ही क इयां लेणा रा देणा पड़ जासी, बै नारद जी रा पग पकड़ लिया । "नाथ अब तों ईं दास ने आप ही बचा सको हो, म्हारी रक्षा करो, मदद करौ ।

नारद जी छुर्री छोड़ी–"इन्द्र देवता औरूं क्यूं मनमें हुवे तो कर देख, आपरी सगति अजमा ले, है लिछमी जी सूं टक्कर लेबारी औकात ?

इन्द्र पाणी पाणी व्हैगो । बोल्यो–मुनिराज इब आप मने और घणो सरमिन्दा मना करो, जियां हुवे बियां ईं जंजाल ने निबेडो ।

नारद जी आंख्यां खोलर नारायण ! नारायण ! ! करी, पलक्यां उघाडर बोल्या आप बार की बार म्हारे साथ चालर अग्रसेन सूं संधि करो । जे वाँरी विष्णु-साधना पूरण व्हैगी तो पछे क्यूं ही उपाय न हुवेलो, वाँरो सूधो सुदरसण चालसी, भगवान आपरा भगतां ने सताहाला ने कदांई छिमा न करे ।

औसाण भूल्यो देवराज मधुशालिणी अप्सरा अर नारद ने लेर तपौवन पूग्या । नारद जी वीणा झणकारी, नारायण ! नारायण ! ! करर अग्रसेन जी री समाधि तोडी । सामें देवरिसी ने देखर बै वाँने कनक दण्डवत करी, अभ्यर्थना करता बोल्या–आप जेडा रिसि मुण्यां रा दरसण पुरबला पुण्य सूं ही हुवे है, दास ने हुकम फरमाओ ।

इन्द्र देवता नाड नीची कर्‌यां नारद जी री ओट बोल्याबाल्या ऊभा हा, लारें ही मधु शालिणी ।

नारद जी आशीस देतां बोल्या–राजन ! सुरराज ने आपरी करतूत पै घणौ पिछतावणौ है, बै आपसूं माफी मांगबा, संधि करबा पधार्‌या है, लारली सगली बातां भूलर आप आँने छिमा करो, छिमा सूंबड़ो दुनियां में क्यूं ही नीं हैं ।

इन्द्र अग्रसेन जी रा पगां में पडबा लाग्यो तौ अग्रसेन जी वाँने हाथां में झेलर हिवडे सूं लगा लियो । आप तो म्हारा मितर हार, मितर ही रह्वोला, मितर री ठोड पगां में नीं, हिवड़ा में है । वाँरी महानता रे आगे लज्जित होता देवराज बोल्या–हूँ आपने न समझो ई ही वास्ते गुन्ना पै गुन्नो करतो गयो, अब सांचे हिरदे सूं पिछतातां आ पंचामृत सी पावन, रूपाली, कला-विद अप्सरा देवी मधुशालिणी आपने अरपण करूं हूँ । संधि री ई मुधरी याद ने, तुच्छ भेंट ने पत्नी रूप में स्वीकार करणे री महर करो ।

नारद जी री साक्षी में वाँरो गन्धर्व ब्याव व्हियो । ऊँ ही टेम ऊपरें सूं फूल बरसाता थका, महामाया लिछमी नभ-वाणी करी, "वत्स अग्रसेन ! आपरी मन चायती बातां व्हैगी है, अब आप अै तपस्यावां बंद करो । राजा राज री धरोहर हुवे है, व्यक्तिगत नीं सार्वजनिक हुवे है, वांरो करतब आत्म-कल्याण सूं बेसी जन-कल्याण है । करम धरम सूं, गिरस्थ सन्यास सूं ऊँचो है, तिरलोकी नाथ रा दरसणां री आपरी जो इंछा रहगी है, बा बगतसर आपूं आप ही पूरी व्हैसी ।"

समुद्र-सुता लिछमी जी री जै जै कार करता सैं ही बठे सूं बीर व्हिया !

खण्ड २

राजा शौणक उवाच :–

वाह महाराज वा ! हूं अज्ञानी तो पैलाँ आहीज समझे हो क लिछमी जी खाली धन री ही देवी है, मने तो आज ही ठा पडी क बै तो सर्व-सगति-मति, सर्व-मंगल-मूला है वाँने बारम्बार

नमस्कार ! तो रामजी भला दिन दे ईंयाँ तो अग्रसेन जी रे केई लुगायां व्हैगी व्हैली ? बै गिरस्थी रा गौरख धंधा में काठा ही फँसगा व्हैला ?

श्री सूत जी उवाच :–

हे राजन ! पहलां तो आप आ समझल्यो क लिछमी जी जगत जननी है । जो आपरी सेवा-पूजा, सरधा-भगति सूं मायड रो मन जीत र ऊँ रो लाड प्यार प्रापत कर लेवे पछे बाप तो ऊँ री मूठी में आपूं आप ही व्है जावे । आपणो मुलक मातृ-प्रधान है, घर री मालकण माँ हुवे है । ईब रही अग्रसेन जी रे गिरस्थचारे में फँसने री बात, सो परिस्थिति गैल वाँ ने अन्त तीं अठारां लुगायां परणीज णी जरूर पडी पण माधवी जी ही पटराणी न सिरोकार रही । बियां वाँ में नाँव ही सोकडल्याँ सो अण चायतो ब्यौहार न रहर बडी छोटी भैणा जश्यो ही प्रेम भाव हो । असल बात आही है क कंचन अर कामणी रा कादा में बै ही धँसे जांने कंवल ज्यूँ जीवणो न आवे । अग्रसेन जी जल में रहर डूब्या नीं ऊँ सूं ऊपरे ही रह्या । हर काम आपरो करतब जाणर करता, आपूं आप ने निमित्त ही मानता कर्ता-भोग्ता नीं ।

तो राजन ! गंगा जमना रे बिच्चे हरद्वार सूं चवदा कोस पिच्छम में, जठे सिंहणी सूं वरदान मिल्यो, लिछमी जी रा दरसण कर्या न देवराज सूं संधि व्ही ऊँ परम पवित्र धरा पै अग्रसेन जी आपरे नांव पै अग्रोदक नगर बसायो जो आगे जार अग्रोहा बाजो । बै जदां ई नव नगर री नींव रखर्या हा तदां वाने एक अज्ञात अवाज सुण पडी क, "हे महाराज ! आप घणे चाव सूं जिणरी थापनां कर र्या हो, बा बठे ताणी ही फलसी, फूलसी, जठे ताणी अठे फूट न

पडसी । फूट रो बीज पन प्यां ईं रो नाश निश्चे है ।" महाराज रो माथो ठणक्यो बै भली भांत सोचली क हूं अश्या उपाय करश्यूं, अश्यी रीत्यां-नीत्यां चलाश्यूं क ईं-सत्यानाशी री जड रो नांव निसाण ही न रहवे, कम सूं कम म्हारे जीतां जी तो ईं ने उगबा न द्यूं, आगे री राम जाणे ! रिध सिध रा दाता गजानन जी रो सुमिरण करर बै ऊँ री सिरजणा सरू करी अर ऊँ ने आपरी राजधानी बणाई । ईं रे पैलां वां री राजधानी चम्पापुर ही ! सीता स्वयंवर री टेम राम रे शिव धनुष तोडबा री टंकार सुणर क्रोध में उकलता परसुराम जी जनकपुरी जाता हुया अठे भी ढब्या । बै इक्कीस बार धरती ने क्षत्र्याँ सूं खाली करणे री कठिन प्रतिज्ञा कर मेली ही वांरा इष्टदेव महादेव जी रो धनुष तोडर तो भगवान राम आँच में घिरत री आहूति ही दे दी ही ।

राजा शौणक उवाच :–

हे मुनिराज परसुरामजी तो क्रोध रा सैं रूप हा, जाणे जमराज अर अगनदेव रा मां जाया भाई, अग्रसेन जी वाँसूं आपरो केंडो कियां छुडायो ?

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजन ठण्डो लो ही गरम लो ने काट्या करे है ! ऊं परम तपस्वी क्रोधी रिसि रे आतां ही अग्रसेन जी वांरा पग पखार र वंदना करी, घणी घणी मिजमानी करी पण परसराम जी तो पारस हा बै क्यांका पसीता, आपरी प्रतिज्ञा याद आतां ही सैंकड़ा छत्र्यां रा रगत पीया

ऊं धारदार परसा ने उठायो, अग्रसेन जी आपरी नाड नीची कर र ऊभा होगा बोल्या "महाराज! जे म्हारो माथो काट्यां ही आपरी प्रतिज्ञा पूरी होती हुवे तो दास हाजर है, बियां मैं जलम सूं छत्री नीं, वैश्य हूं ! आप भृगु पुत्र अर बिरामण होर छत्र्यां ने ही न ओये अश्या खून खराबा अर नर संहार कर सको हो, पण हूं वैश्य होर आप बिरामण देवता पै हाथ न उठा सकूं । आपरो धरम आप कने, म्हारो म्हारे कने ।" परसराम जी पाणी पाणी होगा, महाराज री बातां रो वांने क्यूं ही पडूत्तर न सूझो । असल तो आ है क आ एक भगत अर तपसी री टक्कर ही जी में तपसी मात खागो, क्रोध ने नम्रता जीतगी ! मुनिराज ने, ईं विशिष्ठ नर री पूठ पै हाथ धर्‌यां नाराण दीखगा । बै अग्रसेन जी ने आसीस देर आगे बढगा । भरत-शत्रुघण जी भी दशरथ जी रे सुरगवासी होबा पै नानेरा सूं अजोध्या बावडती बगत ईं ही चम्पापुर में अग्रसेन जी रे अठे एक दो दिन रो पडाव राख्यो, भोजन-विश्राम कर्‌यो ।

राजा शौणक उवाच :–

तो हे मुनिराज अश्यी फूठरी अर ऐतिहासिक चम्पापुरी ने छोडर अग्रसेन जी नवी राजधानी अग्रोहा क्यूं बसाई, ऊँ में अश्यी के विशेषता ही ?

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजा शौणक नवी नवी नगरयां बसाणो ईं कुल री परम्परा रही है, न आ भौम भौत प्रभावशाली ही आ तो हूं आपने बता ही चुक्यो हूं । अग्रसेन जी ईं नव नगर में सगली सुविधावां

रो ध्यान राखर योजनाबद्ध तरीका सूं निरमाण करायो। वास्तु अर तक्षण कला रो नांव उजागर कर्‌यो ! सुदृढ किलो, सुसज्जित राजा महल, भव्य भवन, हाट, बाट, दूकानां बेरा-बावडयां, बाग-बगीचा, मनोरंजन-गृह, सभा-सदन, धरमशाला, पशुशाला, गुरूकुल, चिकित्सालय न भांत भांतरा आश्रम आद सगला ही जीवणोपयोगी साधन सुलभ हा। नगर रे बीचूं बीच स्फटिक री मेढ्याँ, कलात्मक स्तम्भ न सोने रे कलष हालो लिछमी जी रो विशाल मिन्दर बण-वायो जठे रात दिन अखण्ड पूजा पाठ चालतो, एक अश्यो तलाव खुदायो जीं रे जल स्नान सूं कोढ जाश्या केई असाध्य चर्म रोग आपूं आप ही दूर व्है जाता। ईं राजराणी सी सजी संवरी राजधानी रे आगे इन्द्रपुरी ही लजाती। बांरे खजाने में इक्यावन करोड री सुरक्षित सम्पत्ति हमेश रहती, मणि मण्डित सिंहासण न रत्नखचित पलंग देखणे जोग हो ! अकूत हो !! ईं अतुलनीय नगर में एक लाख परवारां रे रहवास री समुचित व्यवस्था ही। महाराजा आपरा नाँव रा सिक्का चलाया न एक नवादी रीत राखी पटकी क अठे आर बसवाला ने हर घर सूं एक ईंट अर एक रिपियो दियो जावेलो, जी सूं रहवास न जीविको पार्जन रा साधन जुटार आतां ही सैंके बरोबर लखपति व्है सके।

राजा शौणक उवाच :–

धन हो महाराज श्री री सूझ बूझ न समता ममता री भावना ने, सात पाँच री लाकडी र एक जणा रो भार। लोगां रो तो एक एक रिपियो र एक एक ईंट गई र आगला रे बात की बात में लाख रिपिया लाख ईंटा आयगी, बूंद बूंद सूं ईंया ही घडो भरे। काम को काम

नीसरे र स्नेह संगठण बधे सो बत्ताई में। आदर्शां ने अश्यो सहज सरल व्यौहारिक रूप देणो घणो दौरो है, अश्यी परम्परा वां कोई जुग पुरूष रे पाण ही पड सके है।

श्री सूत जी उवाच :–

जुग पुरुष अर जगचावा व्हैणो तरवार री धार पै चालणो है महाराज ! अश्या मिनखां ने पग पग पै अग्नि-परीक्षा देणी पडे। बात पै बात आयगी ऊँ जुग में नाग जाति री विष-नगरी रो एक घण जोगा राजा बीसाननराज हो करम जोग सूं ऊँरे सतरा बेट्याँ ही, बो वाँने अतरो लाड प्यार करतो हो क सैं ने एक हीज घर में परणाबो चावे हो, जीं सूं सगली भैणा आखी ऊमर साथ साथ रह सके। बो आपरा राज पुरोहित अर खवास ने देस देसान्तरां में घर वर री तलास में भेजा। बापडा नाई-बामण धरती रो कूणो कूणो हेर मार्‌यो पण कोई एक घर में सतरां डावडा न मिल्या। ऊँ बगत रा चाकर लूण हरामी न व्हैता हा, जीं रो अन्न खाता ऊँ री बाणी पिराण देर भी बजाता। काया हुया स्वामी-भक्त चाकर अै खण ले लिया क जदां ती मालक रो कारज न सरे अन्न-जल ही मूंडे न लगावां। अनसन करयां डोलता, फरता दोण्यू अग्रोहा आ पूग्या ! अग्रसेन जी मिजमानां ने आव आदर दिया न कांसो आरोगणे री कही। दोण्यू आपरी विवसता बतार साफ नटगा। अग्रसेन जी गतागम में पडगा क राम अब करूं तो के करूं अठी पडूं तो कूओ र बठी पडूं तो खाई, घर आया पावणा ने भूखा जाण दयूं तो म्हारे अतिथि सत्कार रो पण टूटे र न जाबा दयूं तो आंरो पण टूटे। आखिर पसोपेस में

कदां ती पड्या रहता, बै स्थिर बुद्धि हा, फट निर्णय लेता रफट काम करता। आगन्तुकां ने अतिथिशाला में भेजा क आप नचीता होर भोजन विसराम करो म्हारे सतरा कँवर है।

आंधो कांई चावे दो आँख्यां पुरोहित अर खवास सुपना में ही न सोचो हीक बायाँ न अश्यो ऊँचो घर-बर मिलसी, बायां बाप भागी नीं आप भागी हुवे है। चाणचक मिली ईं भारी सफलता पै बै घणा राजी व्हिया, वांने दोण्यू हाथां में लाडू दीख्या। केई दिनां रा भूखा तिरसा चकाचक माल उडाबा राजा रसोवडा में पधार्या।

राजा शौणक उवाच :–

हे महाराजा सूतजी ! आपरे पण री रक्षा खातर लाई नाई बिरामण री धोखे सूं प्रतिज्ञा तुडार अग्रसेन जी बेजां ही करी, कूड बोलर आज तीं रा आखा ही जस पै कालूंड लगाली।

श्री सूत जी उवाच :–

हे राजा शौणक शाश्वत धरम अर सामयिक धरम में चिण्यो आंतरो है। कह्यो गयो है क "आपात काले मर्यादा नास्तेः। ईं बगत की परिस्थिति ही अश्यी ही क एक न एक काणी तो ऊँ सतवादी ने भूंठो बणनो ही पडतो। पिराण जावे पण बचन न जावे आ बाँरी अटल मानता ही। ईं बगत वांरे कुल नो कँवर हा, पहला गुलाब देव जी, दूजा गेंदूमलजी, तीजा करणचन्द जी, चौथा मणिपाल जी पांचवा बंटभानु जी छठा ढाबदेवजी सातवां सिंधपोतजी आठवां जैत गजाजी न नवां मंत्रपतिजी। महाराज बुझ्या मन सूं महल रा मायला माल्या में पूग्या। एकला

में आत्मगिलानी व्यक्त करता बोल्या, "हे जगदाधार जगदीश्वर ! आज म्हारे सूं मिथ्या बोलणे रो अक्षम्य अपराध व्हियो है, ईं मनस्ताप सूं म्हारी छाती फाटी जारी है। आदर्शां री आ रीत है क बे ऊपरें सूं हेटे चालबो करे है, अश्या मिथ्या-भाषी राजा सूं जनता के सीखसी ? कानी कानी लोग आंगल्यां उठासी, नागराज रा दूतां ने हूं ओ भूंठो मूंडो किया दिखाश्यूं ? ईं सरमिन्दगी, ईं जग हँसाई सूं तो आतमघात ही ठीक है, प्रभु ईं पापी ने छिमा करजे"।

अतरी कहर बै कमर सूं कटारी काढर आपरे कालजे में घुसेडहाला ही हा क, एक दम साक्षत सतनाराण भगवान विष्णु जी परगट र वाँरो हाथ थाम लियो "वाह ! अग्रसेन वाह ! ! एक भूल सुधारणे खातर दूजी भूल करणो कश्यी बुद्धिमानी है ? आतमहत्या सूं बडो पाप बीजो है ही नीं। हताश होर मनोबल गिराणो आपूं आप ही हार ने नूतणो है, थां जश्या दाना मिनख तीं आ शोभा री बात नीं है, अश्यी सूरखता करहाला री आतमा ने सात भो ही शान्ति न मिले।

गद्गद् होर अग्रसेन जी आपरा आँसुआँ सूं वांरा चरण धोया, जै जैकार करता लाचारी दरसाई "म्हारे कने ईं जघन्य उपाय रे सिवा दूजो चारो हो ही नीं पण आपरी किरपा सूं ओ पाप भी पुण्य होगो, आपरा दरसण री ऊँडी इंच्छा पूरण व्ही ! आप दीन बन्धु-दुख हरता, जगरे पालण करता हो, जो जोवात्मा आपरी नाव परमात्मा रे भरोसे छोड दे पछे ऊंने के चिंता" ?

सर्व शक्तिमान हरि सुलक्या न ऊँ की ऊं बगत आठ झटक जवान बेटा देर वांरी भूंठ ने सांच करी, पत राखी, संकट टाल्यो वांरा नांव हा १ तोबेले, २ कानचन्द, ३ ताराचन्द, ४ वीर

भान ५ नारसेन, ६ मधुसेन, ७ इन्द्रसेन न ८ नागेन्द्र । ओ शुभ दिन हो चैत मास री शुक्ल पक्ष री एकादशी ।

राजा शौणक उवाच :–

जै जै त्रिलोकीनाथ भगवान री जै ! बैकुण्ठ रा धणी री जै !! लिछमीनाराण भगवान री जै !!! गुरू जन सांच ही कही है क भगत री लाज भगवान रे हाथ, रमारमण वां री सगली दुविधा दूर करदी ।

राजा शौणक उवाच :–

हे राजन ! ईंया विष्णु भगवान् बखत पडयां अग्रसेन जी ने दरसण देणेरा आपरा कौल ने पूरो करयो ! अग्रसेन जी घणी घणी बखसींसां देर ब्यायां रा जोसी-खवास ने बिदा करया ! दोण्यू पक्ष रो सुभीतो न शुभ सावो देखर ब्याव मंडया, निकासी हुई । केसरयां पाग, मोत्यां रा झिलमिलाट करता तुर्रा-कलंगी, सोना रा सेवरा, हीरा पन्ना रा कण्ठा न जरी खीमखाम रा अंगरखा पहर्‌यां सतरा बनडा सतरा घोडयां पै सजा, साथ में हाथी-घोडा, गाजा-बाजा, लाव-लस्कर, कुटम-कबीला र जानी चाले तो कोसां तीं गरद उडे र, ढबे तो मुखमल रा डेरा र घीर खीचड्यां, सत पकवानां री मिजमान्यां सतरा बींदा री अश्यी ओपती बरात न कदाई पहलां चढी र न आगे चढे !

जान तीन दिन फलसे बारें उडीकती री पण बेटी हालो सांभे लेने आयो अगवाणी बिना जान आगे कियां बढे ? कोई रे क्यूं ही पल्ले न पड्यो क आखिर हुयो तो हुयो के ? परेसानी में पड्यां महाराज कोई ने समंचार लेबा भेजे ऊंके पहलां ही ब्याई री ठोड बैही जोसी-खवास औसाण भूल्योडा हांफता कांपता आर अग्रसेन जी रा पगां में पडगा । "खता माफ हो महाराज बैठा ठालां ही कुदरत ने कुचमाद सूझी, क महाराणी जी रे एक कन्या औरूं जलमगो है, जे आपरे अठारा कुंवर हुवे तो परणवा पधारो, नीतर ज्यूं आया त्यूं ही सिधारो, नागराज जी री परतिज्ञा सगली बायां ने एक ही कुटम में देणे री ही !

राजा शौणक उवाच :–

आही कोई बात हुई ! कांई खींचताण र सतरा रा अठारा कर्‌या जा सके है ? जलमता ही मांस रा लोथडा ने ब्याणो कतरी भूंडी मसखरी है, बिना ब्यायां बरात पाछी ले जावणो परतिष्ठा सूं खिलवाड नीं है ? महाराज तरवार सूंतर वांने सूधो न कर्‌यो क राम मार्‌यो होती बात तो करो अणूती की कर हुवे, कोई कांख में सूं टाबर टपके है के ?

श्री सूतकी उवाच :–

टाबर कांख में सूं ही टपक्यो ! ईं खलक मुलक में केई कौतक है, केई करिस्मा है ! साधना में अतरी सगती है जो असम्भव ने सम्भव करदे । बेटां रे ब्याव री खुसी री खीर में ईंयां कांकरी रलता देखर एक बर तो अग्रसेन जी ने सांचाणी ही रीस आई, बराती भी घणा

ही ऊफण्या पण महाराज दुनियां देख्या दाना मिनख हा झट आपूं आप पै काबू कर र आगला धणी री परिस्थिति न मजबूरी ने जाणी समझी, ऊं री ठोड आपूं आप ने बिठार सोच्यो, पर-तिज्ञा पालक ही परतिज्ञा पालक रो आदर न करतो तो कुण करतो ? सगो सगा री जड हुवे है बै गम्भीरता सूं विचार र कोई अश्यो गैलो काढणो चावे हा जी सूं सांप भी मरेर लाठी भी न टूटे । जतरा मूंडा बतरी बातां, चाणचक ही लोग के देख्यो क अग्रसेन जी रा सागा भाणजा जोगी जसराज जी आकास मारग सूं उडतां उडतां आर जान में ऊतर्‌या ! जोगियां चोलो, गले में मोटा मोटा रूद्राक्षां री माला, हाथा में चींप्यो, कमंडल न कांख में मृगछाला, डील पै भसम, माथे पै जटा जूट अर आठ आंगल री लिल्लाडी पै त्रिपुण्ड । राम जाणे वाने कठे, कियां ईं बिगडी बात री ठा पडगी ।

मामा कने आर जय शंकर री करी अर बूझो "ब्याव री ईं खुसी में अणमणा कियां ? अग्रसेनजी आपरी उलझण बताई ! जोगीराज छिनभर तो सोच में पड्‌या, पछे नेडे ही बैठया सतरा बनडा में सूं बडा ही बडा ने उठायो, ऊँरो डाँवो हाथ ऊँचो करयो, आँख मीच र अलख निरंजन बोल्या क विभु री काँख सूं बींद बण्यो बणायो एक छोरो टपक्यो । सैं जणेत्यां री आँख्या इचरज सूं फाटी की फाटी रहगी, अग्रसेन जी रा मूंडा पै कृतज्ञता अर खुसी छागी, बै जसराज जी ने हिवडे सूं लगा लियो !

राजा शौणक उवाच :–

बडां रा बडा ही पावणा ! अग्रसेन जी रो ओ करामाती भाणजो वाँरी बडी भैण कुमुद कुमारी रो ही सपूत हुवेलो ? ईं ने कहवै है, नंदी नाव संजोग, जाणे कदां, किण सूं, के काम नीसर जावे ! अै अतरा बडा सिद्ध पुरूष है आ पहलां कुण जाणे हो ?

श्री सूतजी उवाच :–

हीरो आपरे मूंडे सूं खुद थोडी ही कहवे क बो लाखाणी है, आँरो मोल तो बखत पड्‌यां ही कुतीजे । ज्ञान अर विज्ञान रे सिखर पूगणो ही सिद्धि है ! अश्यी सिद्धचाँ कोई तप्या तपाया जसराज जश्या बिरलां ने ही मिले है । इब तो जनेती मंडेती दोण्या में ही हरष रा समदर लहरावा लाग्या । कुटम कबीला रे सागे आर नागराज बीसानन अगवाणी करी, घणी घणी माफी मांगी मान मनवारां करी, मसखरी ही मसखरी में जसराज जी ब्याई ने मोसा बोल्यां म्हे तो आप कही जो कर दिखाई, अब आप ही हर लाडा ने दो दो लाडयाँ परणाओ जणा जाणा ।

करम जोग सूं अहिनगरी रा राजा बीसानन जी रे छोटे भाई दसानन जी रे भी अठारा डावड्‌यां ही औसर चूके सो मूराव, लगे हाथां बोही घर आई गंगा में गोतो लगाणो चायो, मुलक र कहयो सायजी रो हुकम सर माथे ! हे राजा शौणक ईंया हर लाडा रे दो दो लाड्‌यां आई । लाभ-हानि, गुण-औगुण हर बात रा दोण्यू ही पक्ष हुवे है । ईं सामूहिक ब्याव में जठे क्यूं बुरायां गणाई जा सके है बठे दोण्यू ही पक्ष एके साथ नचीता होर गिरस्थी री जिम्मेवारी

सूं बरी व्हिया धन, बगत न मेणत रा अपव्यय सूं बचा जो न्यारा ! आप रे रीत रिवाज रे मुजब नागराज दई दायजा में एक सूं एक दुरलभ घनमोली अर काम री चीजां बस्तां रे सागे केई गोला-बांदी ही दिया । आ दास पिरथा अग्रसेन जी ने घणी भूंडी अर बेजां लागी ! बै सगलां ने सुतंन्तर करता थकां कहयो क नागराज जी आपने मने सूंप्या जो सर माथे, पण सुतन्तरता मिनख रो जलम सिद्ध अधिकार है हूं सैं ने मुगत करूं हूं । मिनख जड वस्तु नीं चेतन प्राणी है, ईंने मोल लेणे अर देणे रो किणी ने अधिकार नीं है । आ पिरथा मिनखाई माथे कलंक है । कोई री मेणत, बुद्धि अर बखत रो तो मोल चुकायो जा सके है, पण मनड़े रो, जिनगाणी रो नीं । जो चाकर, चाकरी लेर मजूरी करबा चालणों चावे बो आपरी इंच्छा सूं चाले, कोई जोर जबरदस्ती नीं है ।

राजा शौणक उवाच :–

चाकरी में जोर जबरदस्ती क्यां की । दोष्या रे जँचा रो सोदो है । शोसण, विवसता दासता अर बलात्कार री ईं में नांव ही दुरगंध नीं है, जीवण रे समझौते री सुगन्ध है । बनड्यां रे सागे लैरहाला देणो ही नीं, दिसावरां तीं दास दास्यां रो घिरणित बौपार चाले है अग्रसेन जी ईं जड पकड्यां खोटा काम रो विरोध कर, मिनखां रा मूल अधिकारां री रक्षा करी है । सभ्यता संस्कृति वांरा गीत गासी, सृष्टि वां ने धिनवाद देसी । तो हे गुरूदेव ईंया महाराजा अग्रसेन जी अठारा बेटा, छत्तीस भुआं अर घणा घणा माल ताल लेर ठाठ बाट सूं अग्रोहा बावड़्या ।

खण्ड ३

श्री सूत जी उवाच :–

हे राजा शौणक ईंया अग्रसेन जी धूम धाम सूं बेटा तो ब्या ल्याया पण ओ गिरस्थी चारो भौत खोटो, ईं गैले में पग पग पै खाडा खोचर एक बलण मिटे र दूजी चालू !

राजा शौणक उवाच :–

आपरी मिटे तो बेटे री र बेटे री मिटे तो पोते री, ईं रेसमी जाले रो तार तार उलझोडो है, बाबाजी धूणा तपो हो क बच्चा जीव जाणे है, बूर का लाडू खाय जो पिछताय र नीं खाय जो पिछताय !

श्री सूतजी उवाच :–

तो महाराज व्ही अश्यी जबरी क बीसानन राज री अठारा कन्यावां दिन में तो मिनखां रा भेष में रहर श्याणी सोवणी भुवां बणी रहती पण रात ने आपरा काला चोगा पहर र नागण्या रो रूप धारण कर लेती जीसू अै घर आंगणे री शोभा, सेजां रो सिणगार न बण सकी । राजकुमार वांने बिलसे किया ? वां री कूंख फले कियां ? ब्याव करणो ही अकारथ होगो थोडा दिनां तो माँय ही माँय घाल मताल होती री पण कुलडी में गुड कीं कर फूटतो, अश्यी बात अण जाणी कदां ती रहती । होतां होतां बात अग्रसेन जी रा कानां तीं पूगी । मिनख ठोकरा खा खा र आपूं आप ही ठाकर हो जावे है । विकट समस्यावां सूं जूझणो वांरो

सुभाव बणगो हो, मोटी सूं मोटी आफत आयां बै हिम्मत न हारता, झुंझलार औसाण नीं भूलता, धीरज सूं सोच समझर कोई न कोई जुगती काढ ही लेता !

राजा शौणक उवाच :–

अश्या क्यूं कारणा सूं ही मिनख दूजा जीवां सूं अलगो है, ऊँचो है, जूझणे रो नांव ही जिनगाणी है । मुस्किलां मिनख ने घडे वांने आसान करबा में एक अणूतो ही आनन्द आवे, सन्तोष मिले, अपणे पराये री पिछाण हुवे न इतिहास स्मृत्यां बणे । फेर अग्रसेन जी पै तो दई-देवता, जोगी-मुनि जश्या असाधारण छिमता हालां री पूरण किरपा ही, ज्याँ रा अश्या मददगार हुवे पछे वाँरो के कहणो !

श्री सूतजी उवाच :–

विसिष्ठा री किरपा विसिष्ठां ने ही मिले, विसेस समरथ हुयां बिना, विसेस जतन कर्यां बिना आँने राजी राखणो कोई सहज है ? ताली एक हाथ सूं न बाजे, दोण्यू हाथ भेले घुणे ! अग्रसेन जी जोगी जसराज ने बुलायो, ब्याव में भीड पड्याँ आयोडा हाल बै पाछा न बाबड्या हा । वाँने ऊँचे आसण पै बिठार महाराज बोल्या–'जसराज बियां तो थे म्हारा भाणजा हो, बेटे बरोबर हो पण बियां जोगी होणे सूं आदर जोग हो, पग छोटो र माथो बडो ! ईंया जग में आपणा बाजवाला तो केई हुवे है, पण असली अपणो बो जो दुख सुख में आडो आवे । अपणेस हाला रे आगे ही हिवडो खोल्यो जावे है, दूजां रे आगे घुंडी खोलणो सिवाय जग हँसाई रे और के है ?"

जसराज जी मुलक्या–'मामा सा आप सावल जाणो हो क जोगी आपरी मरजी रा मालक हुवे है, बै नातो-रिस्तो न देखे, मिनख देखे है, कारज रो औचित्य देखे है ! आप हर तरां सूं म्हारे सूं बडा हो, हुकम हो सो निसंकोच फरमाओ ईंया सरमा मना मारो ।

अग्रसेन जी वांने नाग कन्यावां री करतूत बताई ! जोगी तो आग हुवे है, सुणतां ही वाँने ताव आगो, बिना सोचां समझां आपरा डण्ड कमण्डल उठार सूधा विषपुरी पूग्या । राजमहल रे आगे चोराहा पै धूणी लगार जमगा ! इब ल्यो आखा नगर में दडादड दडादड भाटा ईंया बरसबा लाग्या जाणे आकास सूं गिडा । पीडित पिरजा हा हा कार करती, बार घालती राज री सांकल खुडकाई । मंतरी-संतरी रे सागे नागराज बीसानन सोध करबा नीसरया क आखिर अै बज्जर कीकर पड्या ?

नाग निवास सूं नीसरतां ही वांने जसराज जी तप करता दीखगा । राज सेवक वां काणी आंगली दिखार बोल्या--"महाराज ओ सामे ही जो धूणा तपर्यो है, ओ ओपरो मिनख है, निश्चे ही ओ आपणा राज रो वासी नीं है, क्रोध में भी है, फेर और सगले तो भाटा पडरया है, पण ईंरे आस पास एक कांकरो ही नीं है जरूर आ कुचमाद ईं री हीज है ! नेडे जातां ही नागराज जी वाँने पिछाणगा । अरे ! अै तो आपणा ब्याई अग्रसेन जी रा भाणजा जोगी जसराज जी है । ब्याव री बखत अठारवीं छोरी जलमबा सूं आई आपदा ने कँवरसाब विभुजी री काँख सूं छोरो परगटार अै ही टाली ही, भौत पौंचोडा तपसी है !

आगे बढर अहिपति वांरा पग पकड लिया–बोल्या-नागराज बीसानन रो परणाम स्वीकारो अर किरपा करर महलां में पधारो ! जाणे ज्वाला मुखी फाट्यो–

"किरपा अर थांपर ? थे तो भसम कर देबा रे काबल हो" बलबलता खीरा सी लाल लाल आंख्या काढता जसराज जी विष उगल्या !

बीसानन वाँरा चरण न छोड्या बोल्यो–पहलां दास री खता बताओ पछे जो चाओ सो दण्ड दिराओ !

राजा शौणक उवाच :–

बापडा बीसानन जी रो कहणो ठीक हीज हो, अपराध बतायां बिनां सजा देणो न न्याव है, न उचित !

श्री सूत जी उवाच :–

जसराज जी बेजां कियां करतां, बैं फूंफाया–"थां नागां री नागाई थांकने ही राखो थारी हुशियारी अठे न चाले, श्याणा सूधा सगा सूं धोखा धडी करतां थाने सरम नीं आई ?

मैं समरथ सगा अग्रसेन जी सूं धोखा धडी करी आप आ के फरमारया हो ? अश्यी अनीति हूं कदांई न कर सकूं ।

जोगी राज ऊफण्या–"बताओ ब्याव रो के मतलब हुवे है ?

"म्हारी जाण में तो ईं रो अरथ बंस बढोतरी हीज है ।"

"तो आपरी डावड्यां बंस-वृद्धि रे जोग हैं ?

नागराज जी ने आपरे कुल री काण याद आयगी । बैं आपरी गलती जाणगा । माफी मांगता थकां बोल्या, "आपरो इसारो म्हारी बायां री नाग-कांचल्यां काणी है, वां रे थकां वांरी गोद न भरीज सके, मने आ बात ब्याव रे पहलां ही ब्यायां ने खुलासा बता देणी ही पण बेट्यां रे मोह अर वांरे अश्या ऊंचा घराणा में परणीज बा रा उछाव में हूं सो क्यूं ही भूलगो, इब तो ऊँ रो एक ही ज उपाय है, पण बो उपाय किणी सूं पार न पड़ सके !

राजा शौणक उवाच :–

पार पडो र मना पडो उपाय तो है क ? अतरी सुणतां ही जसराज जी रो गुस्सो क्यूं तो ठण्डो पड्यो हुवेलो !

श्री सूतजी उवाच :–

जसराज जी शान्त होर बोल्या–उपाय कतरो ही मुस्किल हो पार पटकणो ही पडसी । आप मने सावल समझाओ, सूधा सूं सूधो गैलो सुझाओ !

सूधो र टेढो गैलो एक ही ज है, सावण सुद पांचे ने बै ईं चोलां ने उतार र नंदी में स्नान करे न बांबी पूजबा जावे, ईं बीच जे कोई वां ने छाने सी लेजार वांरे सागे जीवतो ही बल मरे तो फेर न रहवे बांस र न बाजे बांसरो, न चोला रहवे र न बै नागण्या बणे !

जसराज जी तरक करी, 'चोलां रे सागे मिनख रे बल मर बारी के तुक है ? खाली चोलां ने ही बालद्या, खै कठे गाडद्यां फेर बै के कर लेसी ?

ओही हो सक तो फेर रोजणो ही क्यां को हो, बै चोला मामूली गाभा नी वरदानी है महाराज वरदानी, मिनख रे बिना एकला तो बै बल ही न सके अर जे धरती में गाडदयां तो वाने सुपना में सो क्यूं दीख जासी अर बै पाछा काढ ल्यासी ।

राजा शौणक उवाच :–

गजब है ! एक ही गैलो र बो ही नागण ज्यूं विष भर्‌यो र डोढो बांको ?

श्री सूतजी उवाच :–

हरि इच्छा कह र जसराज जी आपरा झोली झण्डा लेर बठे सूं ऊठगा । बीसानन जी दो चार दिन ठहरबा तीं घणी ही हाथा जोड़ी करी, पण बै बठे मिजमानी जीमबा तो गया नीं हा, काम बण्यो र रवाना ! चोमासा रा दिन, सावण सुद पांचे ही नजीक, वांने तो आपरा काम री फिकर ही रूकता कियां ?

राजा शौणक उवाच :–

हे गुरूदेव, आ कथा तो घणी ही रहस्यमय होती जा री है, दूजां रे तांई आपरा पिराण देवे धरती पै अश्यो दधिची कुण ?

श्री सूतजी उवाच :—

हे राजा शौणक बिना खम्भा रे अै धरती आकाश अश्या ही परमार्थ्यां रे कांधे थम्योडा है, ईं स्वार्थी संसार में पुण्यात्माओं रो काल होता थकां ही इक्का दुक्का अश्या बलिदानी होता

ही रह्या है, होता ही रहवे ला । जोगी ने जीवण रो मोह नीं हुवे, बै ईं तथ्य ने खाली जाणे ही नीं माने भी है क ईं मिरत्यु लोक में एक न एक दिन मरणो तो निश्चे ही है फेर आ माटी कोई रे काम आता ठिकाणे लाग जावे ईं सूं बढके और के सार्थकता हो सके है ।

जसराज जी न तो मामा ने आर आ बात बताई र न कोई पिराण होम बाला ने हेर्‌यो सोध्यो ! बै नाग पांचे री बाड उडीकबा लाग्या । दिन उगे र रात पड़े, रिसता रिसता छेवट बो दिन आगो । पो फाटतां ही बीनण्या भेली होर नंदी तट पै सांपडबा आई, वांने न्हा धोर सज संवर र नाग पूजा ती बाँबी पै जाबा री जल्दी ही । नित रात ने धारण कर हाला आपरा बरदाई चोला घाट पै उतार र पाणी में धँसगी, बठी ने बै तो जल में किलोलां करबा लागी र अठी ने औसर पार लुकतो छिपतो जोगी जसराज वां काली कांचल्यां रो हरण कर लियो ।

राजा शौणक उवाच :–

रामजी अश्या हेतालु सैं ने ही देवे, मामा री बलण आपरे माथे ले अश्या भाणजा लाखां में दो चार ही हुवे है नीं तर सवा सणा तो खार ऊंठ्यो दूनो माथा में मेल हाला ही ज व्है । जाट जवांई भाणजा रेबारी सुनार, कदे न होवे आपणा कर देखो ब्योहार ।

श्री सूतजी उवाच :–

पांचू आंगल्या बरोबर न हुवे महाराज ! मिनख लरड्यां छाल्यां रो रेवड नीं है जांने एक ही लाठी सूं हांक्या जा सके । जसराज जी जन साधारण नीं, विसेस हो, अणूता हा, बै चोलां

लियां नंदी रे सारे सारे सुन्नाड में आगे बढगा, आपूं आप ही कांकड़ में लकड्यां मेली करी न आप ही सलो लगायो, कांचल्यां ने गोद में लेर चिता पै चढगा। आंख मूंदर पैलां महाजोगी भूतनाथ शंकर रो सुमरण कर्यो, बेबस होर परहित तीं कर्या ईं आतम दाह रा पाप तीं छिमा मांगी ! मां अर मामा मामी रो नांव लेर परणाम करता थकां भौतिक जगत सूं रामा श्यामा करी अर अन्त में अगन देव रो आव्हान कर्यो ! घडी श्यात में ही धू धू करती लपटां चोलां समेत जसराज जी ने लीलगी, कंचन री राख रहगी !

राजा शौणक उवाच :–

हरे ! हरे !! वासदेव किणी ने न छोडे, अगन पड्यां सैं स्वाहा !

श्री सूतजी उवाच :–

तो हे राजा शौणक अठी ने तो आ विनास लीला व्ही न बठी ने नागराज बीसानन रा सेवक नाग पांचे रा तिंवार पै बायां ती बया-बीदड़ी, बेस-बागा लेर आया, लैर ल्याया नागराज जी रो कागद जी में कुसल मंगल जैगोपाल रे पछे, जसराज जी रे आबा-जाबा न चोलां रे नास रा उपाय बताबा री आखी बिगत लिख्योडी ही। अतरा दिनां तीं भाणजे रे विषलोक सूं न बावडबा रे कारण अग्रसेन जी पहलां ही चिंतित हा, अै समंचार बांचता ही वांरो माथो ठणक्यो बै जोग्यां हाली हठ न जसराज जी रा सुभाव ने आछो तरां जाणे हा क एक बर सूंप्योडो कारज बै पूरी तरां सुलटायां बिना न माने, अतरा में ही बेटां री भुआं रोती कलपती आर महाराज ने

अरदास करी क म्हाका मोत्यां सूं सूंगा चोला नंदी तट सूं चोरी चलेग्या है, ईं को ईं बखत ठा पटक बारी किरपा कराओ जणा जार जीव में जीव आवे !

राजा शौणक उवाच :–

हः हः हः हः आँने आपरा चोलां री पडी है र वां ने आपरा भाणजा री, बडका सांच ही कही है ज्यां दाझा त्यां दूखणा, सैं ने आप आप री बलण ! रिसिवर ! बुद्धिमान मिनख दो र दो जोडर मते ही चार करले महाराज श्री री आ संका इब तो निश्चे में बदलगी व्हैली ?

श्री सूतजी उवाच :–

आभास रे विश्वास बणता ही बै जियां हा बियां का बियां ही बावला ज्यूं नंदी कानी भाग्या। कानूं कान आ बात छिण भर में ही सगले फैलगी, जो सुण्यो बो नंदी कानी दबडक्यो, राजमहल में कुहराम माचगो। जसराज जी री मां कुमुद कुमारी बिलखे र पछाटा खावे, महाराणी रोवे तो आठ आठ आंसूं, करूणा री अश्यी बाढ आई क देखणी न आवे। जियां बण्यो बियां सगला ही घटना री ठोड पूगगा भीड रो पार नी कान काट्यां कुआ भरे। मायड री ममता रो ओड के ? महाराज भैण ने हिमलास दे तो की मूंडा सूं, माधवी जी नणद ने बाथ में भर मेली पण छाती दोण्यां री ही फाटे कुण कुण ने धीरज दे ! आपरो बंस बधावण खातर मां जाई भैण री कूंख उजाडी, इकलंती रा हीरा सा पूत री जामण ने निपूती करी, महाराज सगला रो निमित्त आपू आप ने मान्यो आखो अपराध, आखो पाप आपरे माथे ओढ्यो, पण इब सिवाय पिछतावण रे वां रे हाथ हो के ? खेल खतम हो चुक्यो हो, बाको बची ही

जसराज जी री भसम ! अग्रसेन जी आ कालूंड ओढर पिछताबा भरी जिनगाणी न चावे हा, पहलां तो बै र महाराणी जी दोण्यू ही जसराज जी रा सला में कूदबा लाग्या पण कुमुद कुमारी जनणीं रे साथ साथ भैण भी तो ही ! लुगाई रे धणी, बेटा अर भाई तीन्यां री लाय बरोबर हुवे है । बा काठी छाती करर वां ने ढाब्या "गोद तो रीती हुई जो हुई इब बांवल्या मना तोडो, होणी तो होर ही रहवे, दोस आपरो नीं म्हारे हतभागण रे करमां रो है । जसराज मरयो नीं अमर हुयो है, राज अर परकाज रे खातर बलिदान व्हियो है, म्हारी कूंख उजाली है, ईं सहीद री आरती उतारो, कहतां कहतां कुमुद कुमारी अचेत व्हैगी !

राजा शौणक उवाच :-

मां बेटा सूं ही बत्ती, वाहा कुमुद कुमारी वाह !! धन है ऊंरी छाती जो इयां उमडती ममता ने समझदारी सूं दाब ले, दुख में हिम्मत राखर फरज ने न भूले ।

श्री सूतजी उवाच :-

अठी ने तो आंसूडा थोडो हिवडो हलको कर्यो, न अठी ने भैण रे बचना रा मल्लम सूं क्यूं ठण्डक पडी । औसाण आतां ही अग्रसेन जी ने सूझणा पडी क महादेव जी रो मने ओ बचन दियोडो है 'क भीड पड्यां याद करजे, हूँ थारी मदद ने आश्यूं,' बै अध गैलासा होर शंकर, शंकर री रट लगा दी, तन मन री सुध ही न रही । भगत री पुकार भगवान न सुणे आ कदांई हो सके है ? बचना रा बांध्या महादेव जी तत्काल परगट्या । आपरे कमण्डल सूं अस्थ्यां पै इमरत रो छांटो दियो, हर हर महादेव कहता जसराज जी जीवता होगा । चारूंमेर

हरख री लहर दौडगी, फुलडा बरसबा लाग्या, कैलासपति महादेव री जै जैकार सूं दसूं दिसावां गूंजबा लागी । गद् गद् होर अग्रसेन जी आंसुआं सूं महादेवजी रा चरण धोया, भाणजे सूं गले मिल्या ! बेटा ने छाती सूं लगाता मायड रे दूधां री धार छूटगी !

राजा शौणक उवाच :-

घडी भर पहलां कांई हो र घडी भर पछे कांई, कुदरत ही खलका करे है, पासो पलटतां के बार लागे, बिलखता गया र किलकता आया !

श्री सूत जी उवाच :-

और सगला तो राजी होगा पण नाग कन्यावां तो ज्यूं की त्यूं दुखी की दुखी ही री, वांरी बलण कठे मिटी, जीव सूं बत्ती नाग चोला कठे मिल्या ? वांने जसराज जी पै बोली ही रीस आ री ही, बै वांने सराप देबा पै उतारू होगी ! भगवान् शंकर वांने बरजी न समझायो क बै चोला थांको आंको दोण्या को ही जमारो बिगाड़ देता वांरे नास होबा में ही कल्याण हो, हूं आ आछीतरां जाणूं हूं क लत पड्योडी दोरी ही छूटे है, पण ऊंने भूलणे में ही भल भलाई है ।

'पण भगवन'...नाग कन्यावां क्यूं बोलणो चावे ही, पण त्रिपुरारी वांरी बात बीच में ही काटता बोल्या–"पण वण क्यूं ही नीं, हूं अग्रसेन ने आदेस देवूं हूं क बो आपरा कुल रे आ आण बांध देवे क ब्याव री बखत बीनणी रे माथे में नाग रे फण री आकृति सी चूंड न सांप री कांचली सी बुंद की दार चूनडी जरूर पिरावे, ईं सूं वां चोलां री याद बणी रहसी । हर अग्रवाल नागां ने नाना मामा माने, आदर देवे, किणी भी तरां मारे सतावे नीं । साथ ही हल्दी-

मंहदी, कूं कूं-काजल रा थापा मांडर राती जगा देवे, बींद बींदण्यां ने धुकावे, ईं ने 'मायां' कहवे ईं सूं जठे कुमुदु कुमारी जश्यी आदर्श मां री याद अमर रहसी बठे थापा री सिकल नाग फणी ज्यूं होवा सूं नाग कुल रो सम्बन्ध भी दृढ रहसी ।

राजा शौणक उवाच :–

डब भी अग्रसेन जी री कुल वधुआं राजी हुई क नीं ? रूश्योडो एक ही लुगाई रो मनावणो दोरो जो बठे तो अठारा नागण्या, रिसायोडी ही ।

श्री सूत जी उवाच :–

भगवान सैं रा कारज सारे, वां री मनशा की मनशा रहगी र भलो को भलो होगो । दोण्यू हाथ लाडू आयां पछे राजी क्यूं नी होती ? खोटो हुयो तो लाई जसराज रो नागण्यां रो के बिगड्यो !

राजा शौणक उवाच :–

जसराज जी रो ही के बिगड्यो महाराज ? नवो जीवण पार तो वांरो आप आदर दूणो व्हैगो व्हैलो ?

श्री सूतजी उवाच :–

आव आदर तो दूणो कांई चोगणो होगो पण आतम घात रा पाप सूं, वांरो आज तीं रो सगलो ही तप नष्ट होगो, कात्यो पींदो कपास होगो । भगवान शंकर वांने सलाह दी क इब

आप सन्यास त्याग र, गिरस्थी जीवण सरू करो । वांरी गिरस्थी रे भरण-पोषण रो भार महाराज माथे न्हाक्यो । सीस नवा र अग्रसेन जी ईं करतब ने आपरो सौभाग्य मान्यो न आ घोषणा करी क आगे सूं जसराज रा वंसज भभूतिया भाट बाजेला, बाप रे जियां ही अग्रवंश्यां री सेवा करे ला अर म्हारी सन्तानां आं ने आपरा कुलरा चारण, बिरद बखाणिया मान र आव आदर देसी, अन्न, धन, सिरोपाव रो नेग देर मान करसी । ईंयां सगलां रो सुलझाडो कर र महादेवजी अन्तर्ध्यान व्हिया न आखो जन समूह वांरो गुण गाण गातो बन खण्ड सूं राजधानी बावड्यो !

।। इति श्री उजास नाँव रो दूजो अध्याय पूरण व्हियो ।।

* अथः आँथूणी नाँव रो तीजो अध्याय सरू *

खण्ड १

राजा शौणक उवाच :–

हे गुरुदेव ! ईयां जणा नागण्या पूरी सूरी लुगायां व्हैगी फेर तो वां अठारा बेटा न छत्तीस भुआं रे घणा ही टाबर टींगर हुया व्हैला, अग्रसेन जी रो वंश अमर बेल रे जियां बधगो हुवेलो ?

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजाधिराज ! इबतीं री कथा में आप आ जाण चुक्या हो क अग्रसेन जी रे अठारा राण्या न अठारा बेटा हा, कह्यो जावे है क वांरे चोपन पोता न अठारा पोत्यां व्ही । आंरी सन्ताना अर सन्तानां री सन्तानां मतबल पोता पड पोतां रो हिसाब कुण कियां राखे ? सार रूप में अतरी ही ज बात है क ओ कुणबो अतरो बध्यो क एक परवार न रहर, समाज बणगो, बीज सूं बिरछ न व्यक्ति सूं समाज ईंया ही बणे है । ओ समाज बहत्तर तरां रा वैश्यां में सैं सूं सिरोधार होर अग्रवाल जाति रा नांव सूं विख्यात व्हियो ।

उत्तर में हिंवाले सूं लेर दक्खण में मारवाड री सीमा तीं रा आपरा ई विसाल राज ने महाराज श्री अठारा भागां में बांट्यों, जो कुल कहवाया, एक एक बेटा ने बठे रो कुलपति बणार वांरी देख रेख में सुचारू रूप सूं राज काज चलाबा लाग्या !

राजा शौणक उवाच :–

ओ बन्दोबस्त तो महाराज भौत ही चोखो कर्यो, प्रदेसां में बांट्या बिना अतरो बडो राज एकला सूं की कर चाले ? सगला बेटां ने पद, प्रतिष्ठा मिली, काम करबा-सीखबा रो औसर मिल्यो, केन्द्र री छतर छांया में आप आपरी परगती करता चालो, भेला का भेले र, न्यारा का न्यारा ! ईंया अग्रसेन जी महाराज आपरा बेटां ने तो पांती सारू बांट दियो पण आपरा छोटा भाई सूरसेन जी ने सूखो ही राख दियो के ? ओ तो सरासर अन्याय व्हैगो ।

श्री सूतजी उवाच :–

महाराज तो न्याव सूरती हा शौणक जी, बेटां सूं ही बत्ती छोटा भाई ने चाहता आपरे बडे बेटें विभु रे जलम पै जमना तट पै अग्रनगर नांव रो एक पूठरो नगर बसायो हो ईं आगरा रो राज अनुज सूरसेन ने बखश्यो । अग्रसेन जी घणा दूर दरसी हा वांने आगली पाछली सो क्यूं सूझती, नंदी आयां पहलां ही पाल बांधणे में वारो विश्वास हो बै ईं बढता राज-समाज रा वट-बिरछ री जड़ां जमाबा न फलबा-फूलबा खातर अपणेस रो अश्यो इमरत सींचो क ओ जतरो बिखर्यो बतरो ही बंध्यो ! ओ बंधण हो नाता-रिस्ता रो, बै आ व्यवस्था दी क एक आपरे कुल ने छोडर सेस सतरा कुलां में कठे भी ब्याव सगाई कर्या जा सके है ।

राजा शौणक उवाच :–

ईं रीत सूं जठे र गत री शुद्धता रहसी, बठे संगठण होबा सूं सामाजिक बल बधसी, जाण्या बूझ्या सम्बन्ध होणे सूं दाम्पत्य जीवण सुखी व्हैसी, घर रो माल घर में रहयां देज-लेज रो महत्व घटसी, समरथ-असमरथ सैं री पालणा सहज ही हो जासी, खै भाई र खै ब्याई गूदडी रा डोरा ज्यूं गूंथता जासी, जाणे खीर-खांड, स्वर्ण-सुगंध रो मेल ।

श्री सूतजी उवाच :–

बडा बूढा जो क्यूं करगा है सोच-समझ र जन-हित तांई ही करगा है, बा बात बीजी है क बखत गैल रीत-रिवाज पुराणा पड जावे, खै क्यूं स्वार्थी, नासमझा कुतर्की हर बात रो बिगाडो

कर देवे, राजन ! खोटा नियम न हुवे वांरो दुरूपयोग करणिया हुवे है । चोखी रीत्यां-परम्परावां ही आगे जार संस्कृति बणे है–आंने नकारणे री नीं संवारणे री जरूरत हुवे है । भगवान सैं री गाड़ी चालती राखे, गिरस्थी री ईं रामाण सूं चिणी फुरसत पातां ही अग्रसेन जी ने पितृ-रिण, देव-रिण, चुकाबा री सूझी, अवस्था गैल ब्यवस्था करणो ही बुद्धिमानी है, बै तीरथां रा तीरथ गयाजी में जार आप रा बाप रो सराध करणो चायो पण ऊंचा सूं ऊंचा पिण्डतां सूं लाख किरिया करम करायां ही वांरा सुरगवासी जायो रा हाथ पिण्ड-दान ग्रहण करबा ने जल सूं बारें न नीसरया । अग्रसेन जी घणा दुखी व्हिया क म्हारा बाप री हाल तीं सद्गति न हुई, बै हाल प्रेत-योनि में ही ज विचरर्‌या है, इब करूं तो के करूं, बेटे रे फरज सूं किया ऊबरूं ?

राजा शौणक उवाच :–

हे रिसिराज आ तो आप अद्‌भुत ही बात सुणाई, कांई मृत-करम करबा पै बरसां पैली मर्‌या थका पितरां रा परतच्छ हाथ आर बेटा-पोतां सूं पिण्ड लेवता हा ? आ की कर व्है सके है ?

श्री सूतजी उवाच :–

राजन ! आतमा री अमरता में तो क्यूं गलगो है ही नीं । मोक्ष होबा खै ओजूं जलमबां तीं आतमा जठे, जियां रहवे बा ही ज प्रेत-योनि बाजे है । दूजी बात आ है क सबद ही ब्रह्म है, मंत्राँ में अपार सगती है, ज्यां री सुपातर सन्तानां घणे सरधा भाव सूं सराध करे अर मुड्या हाथूं हाथ ग्रहण कर लेवे तो ईं में विसेस इचरज री बात नीं है । सरधा अर भावना ही तो

सम्मोहन है ! तो ईं घटना सूं दुखी अग्रसेन जी माथो पकड्यां घाट माले बैठा हा क वांने धुंधलो सो सरसाव हुयो, एक अवाज कानां में पडी "बेटा ! बामण री कुंवारी कन्या रा सराप सूं म्हारी सद्गति न हुई, हरद्वार, गया, पुष्कर, कासी, सोरों कठेई म्हारो तर्पण न व्है सके, अै सगला ऊँरे सराप री लिछमण रेखा में है, जे तूं लोहा गढ जार पिण्डदान करे तो मने ईं भूत-योनि सूं मुगति मिले ।

राजा शौणक उवाच :–

हे इतिहास-पुराण रा प्रकाण्ड ज्ञाता अग्रसेन जी रा पिता वल्लभसेन जी तो घणा सद्चरित्र अर पुण्यात्मा हा वां सूं अश्यी के भूल हुई जो बिरामण री बेटी वांने सराप दियो, किरपा करर ओ वरतांत भी दास ने सुणाओ, आप सूं क्यूं ही अजाण्यो नीं है ।

श्री सूतजी उवाच :–

हे नृपतिवर ! पुरब ला पाप रे छांटे सूं कदां कदां अश्यो कु संजोग बणे है क अण जाण्या ही कोई अपराध माथे आ पडे ! हुई आ क एक बर महाराजा वल्लभसेन जी वीहड वन में सिकार करबा गयोडा हा, एक मिरग रे पाछे घोड़ो दौडातां, साथ्यां सूं बीछड र बरसाती नाले रे सारे बढगा, मिरग हर्‌या भर्‌या झुरमटां में बडगो, महाराज अठी-उठी झांकर ऊंने तपासे हा अतरा में चाण चक ही वारी निजर ऊं झरणे रा निर्मल जल में नागी न्हाती एक अप्सरा सी डावडी पै पडी, छिन भर तो बै मुग्ध भाव सूं ठग्या सा ऊंने निहारता रह्या, वांने चम्क्यो

व्हियो क आखिर आ अलाय बलाय है के ? मिरगी है क मानवी ? देवी है क दानवी ? पछे वैं आपरी मरजादा जाण र अपूठा व्हैगा, हुवेली क्यूं आपा ने के लेणो देणो ?

नचीती होर शीतल जल में मोज-मस्ती सूं साँपडती छोरी रो ध्यान घोडे री टाप सूं महाराज कानी गयो। बा चिमकी, लाजां मरती भाग र आपरा गाभल्या उठाया, जियां तियां आला डील पै लपेट्या पछे रीस अर घिरणा भरी महाराज कने आर बोली—"हूँ। बाप होर बेटी पै कुद्रिष्टी ? मिनखां री मैली निजरयां सूं बच र ही तो हूँ अठे सुन्नाड में, प्रकृति री पवित्र गोद में रमें ही अठे ही थे पाछो न छोड्यो ? राजा पिरजा रो पिता हुवे है जरां बो ही अश्यी नीच करणी करसी तो लोग अनुकरण की रो करसी ? आदर्श रहसी कठे ? शीत त्याग र आप म्हारी आत्मा दुखाई है, ऊँरे कालूंड लगाई है जी सूं हूँ सराप देऊं हूं क मरयां पछे आपरी आतमा ईंया ही बन बन भटकती रहसी, किणी भी तीरथ री जलांजली आपने सद्गति न दे सके।

राजा शौणक उवाच :–

ल्यो आही कोई बात हुई, अडूं खडूं डोकरी रे माथे पडूं। खुले में नागी न्हाणे री गलती तो करे आप अर दोस देवे दूजा ने ? चुम्बक कहवे क लो क्यूं खिचै ? अरे ओ तो ऊँरो सुभाव है। ईं अकारण सराप ने तो ऊँ छोरी री मर मरदाई हीज कहणी पडसी।

श्री सूतजी उवाच–

क्यूं ही कहो, उतावला बावला पण में जो मूंडा सूं नीसरगी सो सही, ईं ही वास्ते तो

कहवे है क बोल्यां पैली तोलो र आगे पग धरबा सूं पैली न्हालो। राजन कुँवारी बामणी रा बचन अंकारथ कियां व्हैता ? ईं गले पड्या बैधा सूं राजाजी रे हिवडे ठेस लागी बै ऊँ ने ऊँच नीच घणी ही समझाई "हूं अठे अहेर करबा आयो हो तने निहारबा नीं, अणहोणी होणी होगी ईं रो के करूं ? फेर भी साँचे हिरदे सूं पिछताता बाप होर बेटी सूं माफी माँगी जणा जार बा सिल्लाडी पसीजी। बोली—जे आपरा बेटा-पोता जाण्या पिछाण्या सगला तीरथां सूं अलगा जार लोहागढ़ में पिण्ड-दान करसी जणा जार आपरी गत सुधरसी।" तो महाराज ईंया अग्रसेन जी ऊँ दूर देस में जार आपरा बाप ने तर्पत कर्यो।

राजा शौणक उवाच :–

तो फेर बठे तो बाँरा पितर हाथूं हाथ पिण्ड लिया व्हैला ?

श्री सूतजी उवाच :–

लिया, अर आपरा सुपातर बेटा ने घणी घणी आसीसां देर देवलोक सिधार्या।

खण्ड २

श्री सूतजी उवाच :–

ईंया अग्रसेन जी पितर रिण सूं उरिण होर देवरिण सूं बरी होबा री सोची। बै आपरा एक एक बेटा ने होता अर वाँ रा गरूआँ ने पुरोहित बणार अठारा महाजज्ञ करया।

राजा शौणक उवाच :=

अठारा जज्ञ ? आँमें तो अपार धन, अपार सगति लागी हुवेली !

श्री सूतजी उवाच :–

मोटा मिनखां रा मोटा ही कारज ! आपां सगला ही आर्य अग्नि पूजक हाँ । आँ जज्ञा सूं जठे एक छतर रे हेटे आर राजरी संगठन सगति बढ़ी, पिरजा पै प्रभाव पड्यो रिसि मुण्या रा चरण पडचा, अतिथि सेवा हुई, बिणज-बौपार बध्या, दान-पुण्य-उच्छव व्हिया बठे वातावरण ही शुद्ध हुयो । सतरा जज्ञ तो राजी खुसी पूरा होगा पण अठारवों आधो ही रहगो ।

राजा शौणक उवाच :–

जज्ञ ही कोई अधूरा राख्या जाता व्हैला ! खै तो सरू ही न करे, अर करे तो पछे जिया व्है बियाँ पूरो करे । अधबीच में छोडणो तो पुण्य नो पाप ही ज मान्यो जासी !

श्री सूतजी उवाच :–

हे पिरजा पालक पाप-पुण्य री परिभासा काँई अतरी सहज है ! कदाँ कदाँ पुण्य पाप अर पाप पुण्य हो जावे है । सैं भावना अर परिस्थित्याँ रो खेल हैं । हुई आ क जणा अठारवाँ अश्व-मेघ में जज्ञ विधान री रीत रे मुजब घोडा री बलि दी गई तो ऊँ पवित्र अर सुवासित जगाँ पै रगत ही रगत अर जीवता जीव रा टुकड़ा देखर कोमल हिरदे अग्रसेनजी रो मन आतम गिलानी

सूं भरगो । शुभ कारज में ओ घिरणित दृश्य वाँरे कालजे ने मथ नाख्यो । वाँने ईंया लाग्यो जाणे अश्व रो कट्यो माथो हिण हिणार बूझरयो है—"महाराज ! हूं कोई ने हणाऊं सताऊं नीं, जतरी बण पडे मिनखां री सेवा हीज करूं हूं, म्हारे निरपराध जीव री हत्या करर आपरे के हाथ आयो ? जो चीज आप किणी ने दे नीं सको ऊँने लेणे रो के हक है ? ईयां महाराज रे हिवडे में एक ऊठेर एक बैठे । जणा बांसू ओ निर्मम कसाई करम देख्यो सह्यो न गयो तो बै नैण मूंदर आत्मलीन व्हैगा । बारें रो सो क्यूं भूलर मांय ही मांय होगा, सुध बुध ही न रही आंख्या सूं करूणा री गंगा जमना बैवा लागी ।

चिणीक बार में ही दृढ निश्चे सूं वांरे मूंडे पै ऊजली आभा आगी । शनेः शनेः पलक्याँ खोलर शान्त स्वरां में बोल्या, "ईं की ईं बखत बन्द करद्यो ईं हत्यारा जज्ञ ने" कोई रे क्यूं ही समझ न पड्यो क यो चाणचक ही हुयो के ! छोटो भाई सूरसेन न विद्वत् जन घणो ही समझायो क ईं अधूरा कारज ने तो पूरो करद्यो, आगे सूं मना करजो पण बै अटल रह्या, टस सूं मस ही न व्हिया, बोल्या–जणा जागो जणा ही सुवेरो, मालम पड्यां पछे भूल ने आगे धकाणो दूजी भूल ने जलम देणो है, अणजाण में होगी जो होगी, आगे सूं अग्रवालां रा कोई जज्ञ में जीव बलि न दी जावे । अतरी कहर अणमणा सा ऊठगा ।

राजा शौणक उवाच :–

वाह ! अग्रसेन जी वाह ! आपरी गहनता ने कोई न पूग सके । प्रचलित परम्परावां ने तोडर यूं बलिबंद कराणो, अबोल्या पशु री मूक वाणी समझणो, जीव दया रो महात्म जानणो किणी

महापुरूष रो हीज काम है । 'आत्मा ही परमात्मा' जो अतरो संवेदन शील व्है जावे क दूजा रा दुख दरद ने आपरो हीज माने बो मिनख नीं देवता है ।

श्री सूतजी उवाच :–

हे राजा शौणक आं साढ़ी सतरा जज्ञां री स्मृति में अग्रसेन जी अग्रवाल जाति रा साढी सतरा गोत चलाया । आं गोत्रां रा नांव जज्ञां रा पुरोहितां अर्थात बेटा रा गरूंआं रा नांव पै राख्या गया । इब आप विगतवार वांरो बखाण सुणो ।

जुवराज विभु ज्याणे पुष्पदेव भी कह्यो जातो हो वाँरा गरू गर्भष्य वांसू गर्ग गोत, दूजा गेंदूमल वांरा गरू गोभिल रिसि वांसू गोयल गोत, तीजा करणचन्द आँरा गरू कश्यप जी वाँसूं कंछल गोत, चोथा मणिपाल वांरा गरू कोशिक मुनि वांसू कंसल गोत, पाँचवा वृन्ददेव वांरा गरू वशिष्ठ मुनि वासूं बिंदल गोत, छठा टावणदेव वांरा गरू छोम्य रिसि वाँसूं ढालन गोत, सातवाँ सिन्धुपति वांरा गरू शाण्डिल्य रिसि वांसूं सिंघल गोत, आठवां जैत्रसंघ वांरा गरू जेमिनी वांसूं जिंदल गोत, नवां मंत्रपति वांरा गरू मैत्रेय रिसि आंसूं मित्तल गोत, दसवां तम्बोल कर्ण आंरा गरू ताँडव आंसूं तुंगल गोत, ग्यारवां ताराचन्द आंरा गरू तैत्तिरेय आंसूं तायल गोत, बारवां वीरभान आंरा गरू वत्स वांसूं बंसल गोत, तेरवां वासुदेव वांरा गरू धन्यास जांसूं टेरन गोत, चवदवाँ नारसेन वांरा गरू नागेन्द्र आंसूं नागल गोत, पन्द्रवां अमृतसेन आंरा गरू माँडव्य रिसि आंसूं मंगल गोत, सोलवां इन्द्रसेन आँरा गरू ओरण वांसूं ऐरन गोत,

सतरवां माधव सेन आंरा गरू मुद्गल आंसूं मुदकल गोत न अठारवां गोधर आंरा गरू गौतम रिसि आंरों गोत गोवन जो आधो बाजा । अग्रसेन जी जश्या जजमान, वांरा पुत्रां जश्या इन्द्र न ऊं बखत रा नामी रिसि मुनि होता, आँ जज्ञां रो के कहणो, गरूआं रा नांव सूं गोता रो प्रचलण करर गरू महिमा ने ही बढाबो दियो ।

राजा शौणक उवाच :–

हे रिसिवर पूर्वकथा में आप बता चुक्या हो क अग्रसेन जी रो हर बेटो दो दो भुआं ब्याही ही, ईंया बाप एक होता थकां ही मावाँ तो न्यारी न्यारी होकर काँई दोण्यारा पेटां री सन्ताना रो एक ही गोत कहायो जो वाँरा बाप रो हो ?

श्री सूतजी उवाच :–

आपरो सुवाल घणो सटीक, मिह्यो न बखतसर है । गोत्रां रो चलण माँ सूं नीं बाप सूं ही है अस्तु दोण्यूं मातावांरी सन्तानां रा एकसा ही गोत्र रह्या पण नानेरा कानी सूं बीसानन राज री कन्यावां री सन्तति नागबंशी बीसा अग्रवाल न दसानन राज री कन्यावां री सन्तति राजबंशी दस्सा अग्रवाल बाजा । बियां जणा जोगी जसराज नाग कन्यावां रा चोला बाल्या हा जणा दसानन राज री बेटयां आपरी भैणा रो ऊं संकट में साथ न दियो जीसूं दोण्यारी औलादां में क्यूँ अलगाव न मन मुटाव रह्यो पण अग्रसेनजी वांने सावल समझायो क दोण्या रा नाना भाई भाई, एक वंश, एक रगत, एक संस्कृति, कोई छोटो मोटो नीं, सैं बरोबर, लुगायां हाली बे-

बात री बात, बीती बात बिसारबा में ही सार है, प्रेम सूं भाई चारो राखो भेद भाव में के पड्यो है ।

राजा शौणक उवाच :-

बात ऊठतां ही आई गई करर अग्रसेन जी भौत ही दानाई रो काम करयो, अश्या जहर एक बर फूट्या र फूट्या !

श्री सूतजी उवाच :-

हे राजा शौणक अठीने तो जज्ञ में हुई अश्व हिंसा सूं अग्रसेन जी ने वैराग उपजगो न अठीने घर गिरस्थी राज काज रा झंझटां सूं भी बरी होगा, धोला केस भी कनपटी पै आगा, जी सूं बै जुवराज विभु ने राजतिलक करणे रे खातर एक जन सभा बुलाई । पिरजा अर बेटा पोता सगला घणो ही बरजो क हाल थोडा दिन आपरी सीतल छायां ओरूं बणी राखो तो चोखो है पण बै हर काम बखतसर करबा रा हामी हा, धारली जो धारली । विभु ने राज भार संभलाता बोल्या "बेटा ओ फूलां रो नीं काँटा रो मुकट है, मालक राजा नीं पिरजा हुवे है तूं ऊंने स्वामी न खुदने सेवक समझ जे । जनता ने सम्बोधित करतां कह्यो क सैं प्रेम सूं सागे रहर राज अर राजा रो साथ दीजो । सै वरणां ने समान समझजो र आपरी कुमाई रा चार भाग करजो पहलो गो पालण अर दान धरम, दूजो कृषि बौपार, तीजो गिरस्थी रा खरच अर चोथो संचय करजो जो आडे बखत आडा आवे ! शासन रे सुसंचालण खातर ईं मौके बै एक

'अग्रोहा-गण राज्य-परिषद' री हीज थरपना करी ईं मंत्रिमण्डल में इक्कीस वैश्य, चार बिरामण, ग्यारा क्षूद्र न चार क्षत्रीय कुल चालीस सदस्य राख्या गया !

ईयां एक सो तिराणवे बरस री अवस्था में राजपाट त्याग र लाखां डबडबाई आँख्यां, फुलडां री बिरखा ने जै जै कार रे बीच महाराणी माधवी जी ने लैरां लेर ब्रह्मसर नाँव रा रमणिक स्थान पै तप करबा चलेग्या । आवडदा पूरी होबा पै राणी समेत बिमाण चढर सदेह सुरगां पूग्या, देवगण अगवाणी करी, जगतपिता वांरा डेरा ध्रुव-लोक में राख्या जठे बै ध्रुवजी रे आजू बाजू आज तीं चमक र सैं ने गैलो बतावे न आपरा समाज पै निजर राखे !

इति श्री जम्बूद्वीपे, भरतखण्डे, राजीव राज्ये महाराजा अग्रसेन कथा समाप्तम् !

जो भी नर नारी सरधा भाव सूं ईं कथा ने सुणसी सुणासी बी पै भगवान लिछमीनाराण री पूरण किरपा रहसी, बो ईं भो में सातूं सुख भोगसी अर परलोक में सुरगां रा वास दूधां री तलाई पासी । बोल श्री श्री १०८ श्री अग्रसेन महाराज री जै । अग्रोहा नरेश री जै ।

।। इति श्री आँथूणी नाँव रा तीजा अध्याय सागे कथा पूरण व्ही ।।

।। आरती श्री लिछमी मातारी ।।

लिछमी माँ म्हे थारा दास, उताराँ आरती·····जी ।

जय जय विष्णु प्रिया जग जननी,
जय जय पाप पुंज तम हरणी,
जय जय पद्म पुष्प पद धरणी,
थारो क्षीर सिन्धु में वास, उताराँ आरती·····जी ।। लिछमी ।।

धन धन कुलदेवी महामाया,
थाने अग्रसेन नृप ध्याया,
नारद शारद सब गुण गाया,
घर घर थे ही करो उजास, उताराँ आरती·····जी ।। लिछमी ।।

अद्भुत उल्लू री असवारी,
थारे चरण कमल बलिहारी,
मनशा पूरो मात हमारी,
थारो घणो घणो विश्वास, उतारां आरती·····जी ।। लिछमी ।।

।। आरती महाराजा श्री अग्रसेन जी री ।।

जय अग्रसेन हरे, स्वामी जय श्री अग्र हरे,
कोटि कोटि नत मस्तक, सादर नमन करे ।
ओम जय अग्रसेन हरे ।।

आश्विन शुक्ला एकम्, नृप वल्लभ जाये । स्वामी वल्लभ घर जाये ।।
अग्रवंश संस्थापक, अग्र समाज सँवारक । नाग वंश ब्याये ।१। ओम जय ।।

केसरिया ध्वज फहरे, छत्र, चँवरधारी । स्वामी छत्र चँवर धारी ।।
झाँझ, नफीरी, नौबत, झाँझ, नगारे, नौबत बाजत बलिहारी ।२। ओम जय ।।

सत्य, अहिंसा पालक, न्याय, नीति समता, प्रभु न्याय, नीति समता ।।
ईंट रूपै री रीति, बन्धुभाव री नीति, प्रकट करे समता ।३। ओम जय ।।

अग्रोहा रजधानी, इन्द्रशरण आये, प्रभु इन्द्र शरण आये ।
गोत्र अठारा अब तक, पुत्र अठारा अब तक, तेरे गुण गाये ।४। ओम जय ।।

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, वर सिंहणी दीन्हा, स्वामी वर सिंहणी दीन्हा ।
कुलदेवी महामाया, विष्णु प्रिया महामाया, वैश्य करम कीन्हा ।५। ओम जय ।

अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गाये, स्वामी जो सुन्दर गाये ।
कहत 'त्रिलोक' विनय से, 'जीजा' भणत विनय से, इच्छित फल पाये ।६। ओम जय ।

।। आरती श्री लिछमी मातारी ।।

लिछमी माँ म्हे थारा दास, उतारां आरती·····जी ।

अग्र-जीवन

560, गोपालजी का रास्ता, जयपुर-302003 (राज.)

अग्र-बन्धुओ,

अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल के उत्थान-विकास, संयोजन के लिए सहयोग करना-कराना हर अग्रवाल-बन्धु का परम कर्त्तव्य है ।

अग्र-जीवन परिवार समाज के इस पुनीत कार्य में तनमयता से कार्य कर रहा है.।

- अग्रवंश-प्रवर्तक ईश तुल्य महाराजा श्री अग्रसेन की बिभिन्न प्रकार की मूर्तियां, कलेण्डर, ब्लाक, बैज आदि ।
- विभिन्न सामाजिक लेखकों द्वारा रचित साहित्य
- सामाजिक जाति-विधियों की पूर्ण जानकारी
- सामाजिक संगठनों एवं उनके कार्यकलापों की जानकारी
- अग्र-जीवन मेरिज ब्यूरो (वैवाहिक सेवा) अग्रवाल समाज के विवाह योग्य लड़के-लड़कियों की ताजा जानकारी ।
- "अग्र-जीवन" मासिक पत्रिका का प्रकाशन

समाज सम्बन्धि उपरोक्त जानकारी एवं सामग्री के लिए सम्पर्क कर सेवा का अवसर प्रदान करें ।

सम्पर्क सूत्र

रामलाल अग्रवाल

कथाकार के बारे में दो शब्द !

☐ लारला सेंतीस बरसा सूं अग्रवाल समाज पै अतरो, अश्यो अर लगातार लिखणियो, नवो सूं नवो ऐतिहासिक, साहित्यिक अर काल्पनिक लिखणियो, सामयिक समस्यावां रा मौलिक अर व्यवहारिक हल देणियो साहस रे साथ खरी खरी सांच कहणियो त्रिलोक जी रे अलावा बीजो एक ही समाज री जाजम पै निजर न आवे ।

☐ झिझोड झिझोड र जगायो । हँसा हँसा र रूवायो, रोचकता रे सागे जो क्यूं लिख्यो खालो अग्रवाल जाति तीं सीमित न राखर मिनख मात्र रे तीं लिख्यो, साहित्य में समाज, समाज में साहित्य री बेजोड़ मिसाल ।

प्रकाशित सामाजिक साहित्य :– महाराजा श्री अग्रसेन (नाटक), पात्र जी उठे (एकाँकी संग्रह) कच्चे धागे पक्का रिश्ता (नोटंकी) नहीं सांच को आंच (संगीत रूपक), यमराज का दरबार (बाल साहित्य) पवित्र पापी (एकांकी) अखिल भारतीय प्रेतात्मा सम्मेलन (प्रहसन), खंडहर बता रहे हैं (कहानी संग्रह) श्री अग्रसेन गीतांजली (गीत संग्रह) गीत मेरे स्वर तुम्हारे (गीत संग्रह) कथा महाराज श्री अग्रसेन जी री (कथा) ।

पाण्डु लिपियां :– कथा व्यथा अपने आँगन की (श्रव्य-दृश्य कथा काव्य), अग्रांचल कितना मैला कितना उजला (लेख, निबन्ध, संस्मरण) गली गली गूंजे गीता सूं (गीत संग्रह) कवितायें जो दर्द से सिंची मिट्टी में उगी !

ईं अमिट नांव पै जाति समाज जतरो गरब करे, जतरो मान सम्मान दे जतरो अहसान माने, जतरो ई अनमोल निधि रो सार संभाल करे बतरी ही कम है ।

त्रिलोक गोयल : एक परिचय

जन्म —अजमेर २८ जनवरी १९३२

शिक्षा —एम. ए. (हिन्दी) बी. एड. प्रभाकर आई. जी. डो.

आजोविका—अग्रवाल उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर में व्याख्याता

निवास —अग्रसेन नगर, अजमेर

सम्पर्क सूत्र—दूरभाष : २०५२२

- हिन्दी अर राजस्थानी रा मीठा गोतकार, ठावा व्यंगकार, कवि गोष्ठियां, आकाशवाणी अर मंच रा चावा कवि मुलक री अनेकानेक पत्र-पत्रिकावां में प्रकाशित, कई पत्रकावां रा सम्पादक !
- गद्य री आखी विधावां निबन्ध-लेख, कथा-कहाणी, नाटक-एकांकी, संस्मरण-रिपोर्ताज, समीक्षा-समालोचना सैं में हो मोकलो लिख्यो, छप्या न मंचन व्हिया।
- हँसमुख, मिलनसार, मस्त प्रकृति, उदारमना न सैं सूं अपणेस राखणहाला गोयल जी रो व्यक्तित्व एक अणूतों ही आकर्षण अर अमिट प्रभाव राखे। साहित्य, चित्र सगीत, अभिनय, केई कलावां रा संगम, बहुमुखी प्रतिभा रा धणी, आदर्शां में जीवणिया समाज सेवा रो व्यसन, वाणी में सम्मोहन, प्रीत रो पूतलो, संघर्षा सूं जूझणियो, जीवट रो मिनख।

= मुद्रक :—शंकर आर्ट प्रिंटर्स, जयपुर =

92

कथा : श्री महाराजा अग्रसेन जी

卐 卐

-: कथाकार :-
त्रिलोक गोयल
अग्रसेन नगर,
अजमेर

प्रथम संस्करण
1984

मूल्य
पांच रूपये

-: प्रकाशक :-
रामलाल अग्रवाल
अग्रजीवन प्रतिष्ठान
गोपालजी का रास्ता
जयपुर-3

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थान :-
अग्रजीवन कार्यालय
जयपुर

卐 卐